सोना 64,455
चांदी 75,500
तिथि-माघ शुक्ल पूर्णिमा
शेयर मार्केट 73,117
निफ्टी 22,287
अधिकतक 24 डिग्री
न्यूनतम 15 डिग्री

लखनऊ से प्रकाशित एवं उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों से एक साथ प्रचारित

चर्चित राजनीति

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
-: सर्वाधिक लोकप्रिय समाचार पत्र :-

www.charchitrajnit.com | वर्ष-20 अंक- 94 | R.N.I. No. UPHIN/2004/14385 | लखनऊ, शनिवार, 24 फरवरी 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य : 2 रुपये

वाराणसी को मिली 13 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं की सौगात

काशी की तर्ज पर सीरगोवर्धन का दिख रहा नया स्वरूप : योगी

ये प्रोजेक्ट्स काशी के साथ-साथ पूर्वांचल के, पूर्वी भारत के विकास को गति देंगे

❑ विपक्षी गठबंधन पर पीएम मोदी ने साधा निशाना, कहा, परिवारवादी दल दलित, पिछड़ों को आगे नहीं बढ़ना देना चाहते

चर्चित राजनीति/संवाददाता

वाराणसी । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के करखियाव अमूल प्लांट परिसर में 13,000 करोड़ रुपए से अधिक की 35 परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसी दौरान उन्होंने कहा कि ये प्रोजेक्ट्स काशी के साथ-साथ पूर्वांचल के, पूर्वी भारत के विकास को गति देंगे। एक आधिकारिक बयान के अनुसार इन परियोजनाओं में कई सड़कें, रसोई गैस बॉटलिंग संयंत्र, दूध प्रसंस्करण इकाई और बुनकरों के लिए रेशम कपड़े की छपाई का सामान्य सुविधा केंद्र शामिल हैं। वाराणसी के कपड़ा क्षेत्र के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान की आधारशिला रखी। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक नए मेडिकल कॉलेज और 'नेशनल सेंटर ऑफ एजिंग की नींव भी रखी।करखियांव में इस समारोह में प्रधानमंत्री मोदी खुली जीप में सवार होकर पहुंचे, उनके साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी थे। जैसे ही प्रधानमंत्री को ले जा रहा वाहन धीरे-धीरे निर्धारित मंच की ओर आगे बढ़ा, दोनों तरफएकत्र लोगों ने फूल बरसाए और हाथ हिलाए। प्रधानमंत्री मोदी ने भी भीड़ की ओर देखते हुए हाथ हिलाया और भीड़ की ओर हाथ जोड़े, जबकि योगी आदित्यनाथ हाथ जोड़कर खड़े रहे। इससे पहले दिन में प्रधानमंत्री ने संत रविदास की एक भव्य प्रतिमा का अनावरण किया और संत रविदास की 647 वीं जयंती समारोह में भाग लिया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी दौरे के दूसरे दिन शुक्रवार को यहां काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्वतंत्रता भवन में सांसद ज्ञान प्रतियोगिता, सांसद फोटोग्राफी प्रतियोगिता और सांसद संस्कृत प्रतियोगिता के प्रतिभागियों से संवाद किया और विजेताओं को पुरस्कृत किया। यहां पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने यहां लगाई गई चित्र प्रदर्शनी भी देखी। तीन चरणों में हुई काशी सांसद ज्ञान प्रतियोगिता में दो लाख से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया था। पांच आयु वर्ग में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसके विजेता प्रतिभागियों टीम वन के ओम सिंह, नैतिक मौर्य और शुभम मौर्य को प्रधानमंत्री ने पुरस्कृत किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सीरगोवर्धनपुर में नया स्वरूप काशी की तर्ज पर देखने को मिलता है। संत रविदास की 647वीं जयंती समारोह को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि दस वर्ष पहले यह कल्पना थी, विवाद थे। भव्य समागम की जगह नहीं मिल पाती थी। सड़कें संकरी थी, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता, मार्गदर्शन व नेतृत्व में आज पूज्य संत रविदास महराज का पावन तीर्थ नई दिव्यता-भव्यता से चमकता दिखाई दे रहा है। आज संग्रहालय का शिलान्यास हुआ है। यह संगत जब उनकी 650वीं जयंती को मनाएगा तो अगले तीन वर्ष के अंदर ही भव्य स्मारक संग्रहालय के रूप में देखने को मिलेगा। मुख्यमंत्री योगी ने इस दौरान 101 करोड़ से सीर गोवर्धनपुर में संत रविदास मंदिर से संबंधित आध्यात्मिक पर्यटन विकास कार्यों के लोकार्पण-शिलान्यास किया गया और कहा कि प्रधानमंत्री ने तीसरी बार सीर गोवर्धन में आकर संत रविदास जी की प्रतिमा व पार्क का लोकार्पण किया है। देश 1947 में आजाद हुआ। उसके पहले भी लोग घोषणाएं करते थे, लेकिन क्या कार्य हो पाया। प्रधानमंत्री मोदी ने जगद्गुरु रामानंद व रविदास जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए कार्यों को धरातल पर उतारा है। जगद्गुरु रामानंद ने यही कहा था 'जाति-पाति पूछे नहीं कोई-हरि को भजे सो हरि का होई' ... यह हमें आज देखने को मिल रहा है। समाज में सबका साथ-सबका विकास का मंत्र साकार हो रहा है। हर गरीब को मकान, शौचालय, पांच लाख रुपये की आयुष्मान भारत की गारंटी मिल रही है। साथ ही जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा रही है। स्वतंत्र भारत में पहली बार बाबा साहेब के पंच तीर्थों को सम्मान देने का कार्य हुआ है। इसके लिए पूरा देश व समाज पीएम के प्रति आभार व्यक्त करता है। सीएम योगी ने कहा कि काशी की धरती के माध्यम से पीएम ने देश-दुनिया को नई प्रेरणा दी है। कोरोना कालखंड में हर कोई सशंकित रहता था कि 140 करोड़ भारतवासी कैसे जीवित रहकर आगे बढ़ पाएंगे, लेकिन प्रधानमंत्री ने फ्री में टेस्ट, वैक्सीन व उपचार की व्यवस्था की। संत रविदास की इस उक्ति को पीएम मोदी ने चरितार्थ किया। चार वर्ष से 80 करोड़ लोगों को बिना भेदभाव फ्री में राशन मिल रहा है।

संक्षिप्त समाचार

शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को चुनाव चिह्न मिला

(एजेंसी) नई दिल्ली। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री शरद पवार के गुट वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी(राकांपा) को लोकसभा चुनाव से पहले चुनाव चिह्न आवंटित कर दिया गया है जिसमें तुरहा बजाते हुए एक व्यक्ति है। चुनाव आयोग ने श्री पवार को गुरुवार रात पत्र भेजकर इसकी सूचना दी। आयोग ने कहा कि पावर गुट लोकसभा चुनाव में तुरहा बजाते हुए आदमी के चुनाव चिह्न का उपयोग कर सकेगा। आयोग ने यह निर्णय राकांपा में विभाजन के बाद उठे विवाद के संबंध में उच्चतम न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखते हुए लिया है।

6 साल की बच्ची की गवाही से दुष्कर्मी को 20 साल कैद

(एजेंसी) ठाणे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले की अदालत ने छह वर्षीय बच्ची (पीड़िता) की गवाही और अन्य सबूतों के आधार पर दुष्कर्मी को 20 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। विशेष पॉक्सो अदालत के न्यायाधीश डीएस देशमुख ने 2021 के एक मामले में ठाणे के दिवा क्षेत्र के एक गांव के रहने वाले 47 वर्षीय दोषी पांडुरंग शेलार पर 5,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया। न्यायाधीश ने निर्देश दिया कि जुर्माना राशि पीड़िता को मुआवजे के रूप में दी जाए। साथ ही कानून के प्रावधानों के अनुसार अतिरिक्त मुआवजे के भुगतान के लिए मामले को जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) को भी भेजा जाए।

21 मार्च को होगा बिहार विधान परिषद का मतदान

(एजेंसी) पटना। चुनाव आयोग के द्वारा बिहार विधान परिषद के लिए मतदान की घोषणा कर दी गई है। बिहार के 11 सीटों के लिए चुनाव होगा, जिसमें 4 मार्च को नोटिफिकेशन होगा। बिहार विधान परिषद चुनाव की नामांकन की आखिरी तिथि 11 मार्च तक है। 12 मार्च को नामांकन की जांच होगी और 14 मार्च को नामांकन वापस लिए जाएंगे।

पूर्वांचल एक्सप्रेस पर भीषण हादसा

डिवाइडर से टकराई तेज रफ्तार कार, दंपती समेत 3 की मौत

(संवाददाता)

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में एक भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां पर स्थानीय थाना क्षेत्र कूरेभार के पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर आज सुबह बिहार की ओर जा रही तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकरा गई। यह हादसा इतना भीषण था कि कार के परखच्चे उड़ गए। हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे की जानकारी होने पर घटनास्थल पर चीख-पुकार मच गई। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया गया। यह हादसा स्थानीय थाना क्षेत्र कूरेभार के पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर सेउर गांव के पास हुआ। यहां एक तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकरा गई। इस हादसे में कार सवार एक ही परिवार के पति-पत्नी समेत तीन लोगों की मौत हो गई। जबकि पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे कूरेभार सीएचसी से मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। हादसे में बिहार के बिहिया आरा निवासी राम चंद्र गुप्ता (55), उनकी पत्नी माया देवी (52) और चिंता देवी (55) की मौत हो गई। दुर्घटना की जानकारी होने के बाद घटनास्थल पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई। सूचना पर यूपीडा कर्मी भी मौके पर पहुंचे और घायल विकास को सीएचसी कूरेभार ले गए। वहां हालत गंभीर देखते हुए उसे मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।

संदेशखाली में फिर बिगड़े हालात

भीड़ ने टीएमसी नेताओं के घर में लगाई आग

(एजेंसी)

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में संकटग्रस्त संदेशखाली के कुछ हिस्सों में शुक्रवार को सुबह फिर से विरोध प्रदर्शन हुए। पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव कुमार मौके पर पहुंचे और दोषियों के खिलाफकड़ी कार्रवाई का भरोसा दिया। शुक्रवार सुबह नाराज स्थानीय लोगों ने इलाके में जबरन जमीन हड़पने एवं महिलाओं का यौन शोषण करने के आरोपी तृणमूल कांग्रेस नेताओं की संपत्तियों में आग लगा दी।

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के स्थानीय नेताओं के घरों में भी भीड़ ने तोड़फोड़ की। लाठियों से लैस प्रदर्शनकारियों ने संदेशखाली के बेलमाजुर इलाके में मछली पकड़ने के एक यार्ड के पास छप्पर वाले ढांचे को आग लगा दी और फरार तृणमूल नेता शाहजहां शेख एवं उनके भाई सिराज के खिलाफअपना रोष प्रकट किया। पता चला है कि जलाया गया ढांचा सिराज का था। एक प्रदर्शनकारी ने कहा, ''पुलिस ने वर्षों तक कुछ नहीं किया। यही कारण है कि हम अपनी जमीन और सम्मान वापस पाने के लिए सब कुछ कर रहे हैं। बाद में पुलिस इलाके में दाखिल हुई और उसने प्रदर्शनकारियों को समझाने की कोशिश की। कुमार अपराह्न में अशांत क्षेत्र में पहुंचे और स्थानीय लोगों से बात की।कुमार ने स्थानीय लोगों से कहा, आप अपनी शिकायत दर्ज कराएं। हम कार्रवाई करेंगे। हम यहां पुलिस कैंप स्थापित करेंगे। लेकिन मैं आप सभी से अनुरोध करूंगा कि कृपया कानून अपने हाथ में न लें। संवाददाताओं से बात करते हुए कुमार ने कहा, पुलिस कड़ी कार्रवाई करेगी। हम क्षेत्र में कानून का राज स्थापित करेंगे। डीजीपी ने कहा कि कानून हाथ में लेने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि पुलिस और प्रशासन ने ग्रामीणों की हड़पी गई जमीन वापस करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इससे पहले डीजीपी ने बुधवार को संदेशखाली का दौरा किया था और वहां पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक की थी।

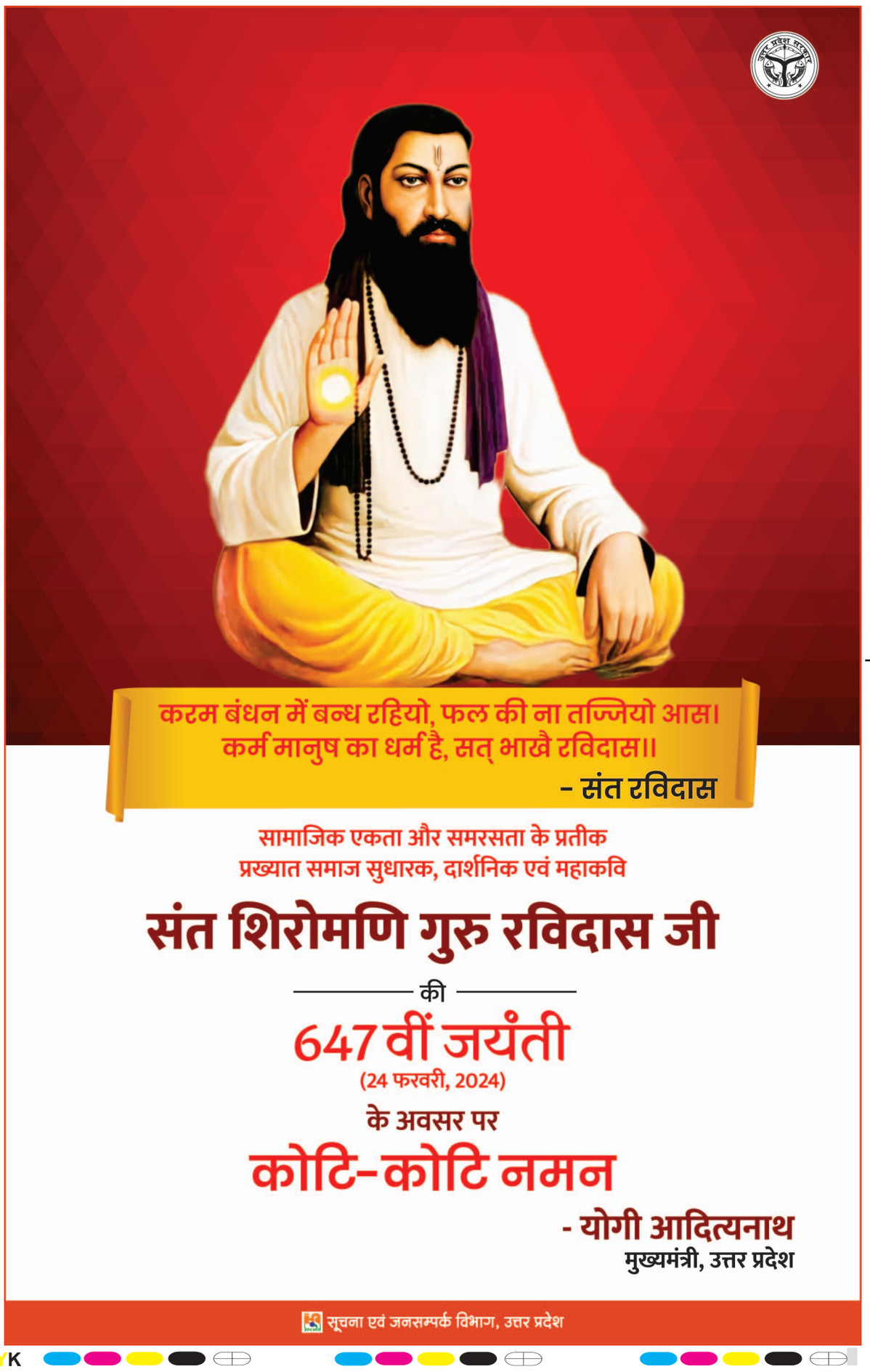

101 कन्याओं का कन्यादान करेंगे कल्पा कांतिलाल प्रेमजी मारू

सामूहिक विवाह समारोह 25 को श्री राम लीला मैदान में

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। प्रधानमंत्री ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के जिस मूल मंत्र को साकार करने का जो संकल्प दिया था, उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए क्लासिक समूह अब बेटी बसाओ का कृत संकल्प लेते हुए आगामी 25 फरवरी 2024 को श्री राम मैदान ऐशबाग, लखनऊ में 101 निर्धन-निराश्रित बेटियों का श् क्लासिक सामूहिक विवाह श् का आयोजन करेगा। क्लासिक सामूहिक विवाह के संयोजक कांतिलाल पी मारू ने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के साथ मेरा संकल्प बेटी बसाओ का है, जिसको फलीभूत करने के लिए उत्तर प्रदेश के अवध प्रान्त की 101 निर्धन-निराश्रित बेटियों का चयन क्लासिक सामूहिक विवाह समारोह के लिए किया गया है। उन्होने बताया कि

जिस प्रकार अयोध्या में भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा हुई, अवध में राम आए, चहु दिशा राम मय हुई। ऐसे मनोरम वातावरण में जिस प्रकार भगवान श्री राम व माता जानकी का विवाह हुआ था, उसी भांती 101 बेटियों का विवाह होगा। कल्पा कांतिलाल मारू ने बताया कि क्लासिक सामूहिक विवाह समारोह में सभी 101 बेटियों को सुहाग की सभी चीजों के साथ घर गृहस्थी की सभी चीजें बर्तन, अलमारी, डबल बेड, रजाई गद्दा, कपड़े के साथ घरेलू उपयोग की अन्य चीजें भेंट की जायेंगी। पंडित आदित्य द्विवेदी ने बताया 101 निर्धन - निराश्रित बेटियों के क्लासिक सामूहिक विवाह समारोह में वर पक्ष के 25 लोगों एवं वधू पक्ष के 25 लोगों को मार्ग व्यय भी दिया जायेगा। इसके अलावा वर-वधू पक्ष के सगे सम्बन्धी भी इस समारोह में शामिल होंगे। उन्होने बताया कि इस समारोह में कांतिलाल पी मारू एवं उनकी पत्नी कल्पा कांतिलाल मारू 101 कन्याओं का कन्यादान करेंगे। हरीश चन्द्र अग्रवाल ने बताया कि क्लासिक सामूहिक विवाह समारोह में उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, डॉ दिनेश शर्मा राज्य सभा सांसद, उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक, पंकज सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपाध् विधायक नोएडा, डॉ नीरज बोरा विधायक लखनऊ उत्तर क्षेत्र उपस्थित होंगे। प्रेस वार्ता मेंराजेश गुप्ता, नितेश अग्रवाल , गोपाल कुमार , राजेश कुमार , हर्षित, सुशांक अरोड़ा, विनोद सिंघल, अचल गुप्ता, छवि गर्ग उपस्थित थे।

केसरी खेड़ा वार्ड में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

संवाददाता, लखनऊ। कैंट विधानसभा स्थित केसरी खेड़ा वार्ड में बूथ संख्या 76 पर लखनऊ सांसद एवम केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की प्रेरणा से नि:शुल्क स्वास्थ शिविर का शुभारंभ लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने फीता काट कर किया । अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि लखनऊ सांसद राजनाथ सिंह की प्रेरणा से जरुरतमंद परिवारों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिससे स्वास्थ्य परीक्षण करके यदि आवश्यकता हो तो स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराया जा सके। स्वास्थ्य शिविर में विशेषज्ञ डॉक्टर द्वारा हड्?डी रोग विशेषज्ञ, दंत रोग, हृदय रोग संबंधी ब्लड प्रेशर, शुगर, थायराइड, खून की कमी, प्रैक्चर का इलाज, गर्दन व घुटनों का दर्द, स्लिप डिस्क, कमर दर्द आदि बीमारियों की जांच कर उपचार किया गया। शिविर में 426 मरीजों के स्वास्थ्य परीक्षण के उपरांत निरूशुल्क दवा वितरित की गई। शिविर में वरिष्ठ बीजेपी नेता मान सिंह, अजय त्रिपाठी मुन्ना, निवर्तमान मंडल अध्यक्ष सचिन वैश्य, मंडल अध्यक्ष मनोज लोधी, बिंदु मिश्रा, शक्ति, वार्ड अध्यक्ष दीपक।

वामपंथी दलों ने उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन के आलोकतांत्रिक संचालन पर हैरानी जतायी

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के वामपंथी दलों ने प्रदेश में इंडिया(गठबंधन) के अलोकतांत्रिक संचालन और घटक दलों द्वारा वामपंथी दलों की उपेक्षा पर हैरानी जताई है। वे इस बात से चिन्तित हैं कि भाजपा को परास्त करने तथा संविधान, लोकतन्त्र और जनता के हितों की रक्षा के उद्देश्य को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा। यहां जारी एक संयुक्त प्रेस बयान में वामपंथी दलों के नेताओं ने कहा कि उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन में शामिल बड़े दलों सपा और कांग्रेस द्वारा प्रदेश में भाजपा को पराजित करने के लिए जिस गंभीरता और प्रतिबद्धता के साथ काम करना चाहिए वह नहीं किया जा रहा है। जबकि यह निर्विवाद सत्य है कि उत्तर प्रदेश में वामपंथी दल सीपीआईएम, सीपीआई, सीपीआई माले, फारवर्ड ब्लॉक और लोकतान्त्रिक जनता दल सांप्रदायिकता और भारतीय जनता पार्टी की सरकार की जन और जनतंत्र विरोधी नीतियों के खिलाफलगातार सड़क पर उतरकर आंदोलन कर रहे हैं। और वे वामदल ही हैं जो प्रदेश में भाजपा को पराजित करने के लिए सबसे ज्यादा गंभीर और प्रतिबद्ध हैं।यह विडंबना ही है कि इंडिया गठबंधन के कुछ घटक दलों द्वारा लोकसभा की सीटों की एकतरफा तरीके से घोषणा की जा रही है। गठबंधन में शामिल वामपंथी दलों से इन दलों द्वारा कोई राय मशवरा नहीं किया जा रहा है। वामपंथी दलों ने कहा है कि यह रवैया इन दलों की भाजपा के खिलाफ प्रतिबद्धता की कमी को दिखाता है। लगता है इन दलों में निहित स्वार्थो को पूरा करने के की प्रतिबद्धता अधिक है।वामपंथी दलों ने कहा कि वे पूरी ताकत से उत्तर प्रदेश में भाजपा को हराने के लिए काम करेंगे परन्तु इन दलों के मनमानेपन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

भारत में नवाचार की चुनौतियो और अवसरो पर हुयी चर्चा

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। मोहनलालगंज के अंबालिका इंस्टिट्यूट ऑफमैनेजमेंट एंड टेक्नोलाजी में सातवें दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि समाज सेविका नम्रता पाठक पत्नी बृजेश पाठक,डिप्टी सीएम व एकेटीयू के कुलपति प्रो0जेपी पांडे ने कालेज के कार्यकारी निदेशक अम्बिका मिश्रा व विधायक अराधना मिश्रा की मौजूदगी में दीप प्रज्ज्वलित कर किया। जिसके बाद सम्मेलन में अतिथियो व शिक्षाविदो ने पहले दिन भारत में नवाचार की चुनौतियो और अवसरो पर विस्तृत चर्चा की।मुख्य अतिथि समाजसेविका नम्रता पाठक ने कहा स्थानीय स्तर पर नवाचार को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है जब कि भारत की समृद्व सांस्कृतिक विरासत को भी पोषण ओर सरंक्षित रखना महत्वपूर्ण हैं।मुख्य अतिथि एकेटीयू के कुलपति प्रो0 जेपी पांडे ने अभिनवता के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते हुये कहा हम सभी को मूल स्तर पर नईता को प्रोत्साहित करना चाहिए।किसानो व आम व्यक्तियो से लेकर छात्रो तक को प्रगति व जीवन की गुणवत्ता में संतुलन बनाने के लिये प्रोत्साहित किया।अम्बालिका के कार्यकारी निदेशक अम्बिका मिश्रा ने नई शिक्षा नीति के महत्व पर जोर देते हुये कहा कि हम सभी को एक मजबूत ओर समानाधिकारी शिक्षा प्रणाली के निर्माण की दिशा में काम करना चाहिए जो हर व्यक्ति को उसकी पूरी क्षमता को समझने ओर हमारे राष्ट्र की प्रगति में सार्थक योगदान देने की क्षमता प्रदान करती हैं।सम्मेलन में पहले दिन भारत सरकार के विज्ञान संचार के पूर्व मुख्य अध्यक्ष प्रो0चन्द्र मोहन ने नवाचार के अवसरो के बारे में मूल्यवान अवलोकन प्रदान किया।उन्होने स्वतंत्रता के बाद विज्ञान की क्रांति का वर्णन किया जो भारत के उच्च शिक्षा ओर विज्ञान व प्रौद्योगिकी को बढावा देने के लिये वैज्ञानिक संस्थानो के सुधारों के माध्यम से की गई। प्रो0विनोद चन्द्रा,बीएचयू के काया चिकित्सा के एमडी प्रो0ओपी सिंह,डॉ0पुनीत मिश्रा ने नवाचार से सम्बंधित अनेक विचारो पर परिचर्चा की।उद्घाटन सत्र का समापन निदेशक प्रो0आशुतोष द्विवेदी व अतिरिक्त निदेशक प्रो0श्वेता मिश्रा ने अतिथियो को धन्यवाद देकर किया।कार्यकारी निदेशक अंबिका मिश्रा ने अतिथियो को पुष्प गुच्छा व स्मृति चिन्ह भेटकर सम्मानित किया।सम्मेलन का सफलापूर्वक आयोजन संस्थान के डीन प्रो0अभिषेक मिश्रा,डा0पंकज प्रजापति, सतीश कुमार सिंह, डा0अवनीश कुमार सिंह ने किया।

मोदी सरकार ने सर्वांगीण विकास के लिए राज्य सरकारों को साथ लेकर चलते हुए लोगों का विश्वास जीता है

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। वर्ष 2004-14 के मुकाबले 2014-23 के दशक में वामपंथी उग्रवाद-संबंधित हिंसा में 52 प्रतिशत और मृतकोंकी संख्यामें 69 प्रतिशत की कमी आई वामपंथी उग्रवाद के कारण सुरक्षाबलों की मृत्यु 1750 से घटकर 485 (72 प्रतिशत की कमी) नागरिकों की मृत्यु 4285 से 1383 (68 प्रतिशत की कमी) आई है केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार ने वामपंथी उग्रवाद पर नकेल कसने के लिए एक आक्रामक रणनीति अपनाई है। ग् प्लेटफॉर्म पर पोस्ट्स की श्रृंखला में श्री अमित शाह ने कहा कि वामपंथी उग्रवाद पर मोदी सरकार के कड़े प्रहार के परिणामस्वरूप आज ये समस्या खत्म होने की कगार पर है। उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवाद-प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी पर्याप्त इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण से मोदी सरकार ने यहां के गरीबों के दिलों को जीता है। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि मोदी जी की विजनरी नीतियों के कारण आज वामपंथी उग्रवाद अपना आधार खो चुका है।

श्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने वामपंथी उग्रवाद-प्रभावित क्षेत्रों में विकास और सुरक्षा के प्रति होलिस्टिक अप्रोच अपनाते हुए वामपंथी उग्रवाद पर करारा प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने सर्वांगीण विकास के लिए राज्य सरकारों को साथ लेकर चलते हुए लोगों का विश्वास जीता है। गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 2004-14 के मुकाबले 2014-23 के दशक में वामपंथी उग्रवाद-संबंधित हिंसा में 52 प्रतिशत और मृतकोंकी संख्या 6035 से 69 प्रतिशत कम होकर 1868 हो गई है।

इसी प्रकार वामपंथी उग्रवाद की घटनाएं 14,862 से कम होकर 7,128 रह गई हैं। वामपंथी उग्रवाद के कारण सुरक्षाबलों की मृत्यु की संख्या 2004-14 में 1750 से 72 प्रतिशत घटकर 2014-23 के दौरान 485 हो गई है और नागरिकों की मृत्यु की संख्या 68 प्रतिशत घटकर 4285 से 1383 रह गई है। इसी प्रकार, हिंसा वाले जिलों की संख्या 2010 में 96 थी, जो 2022 में 53 प्रतिशत घटकर 45 रह गई। इसके साथ-साथ हिंसा रिपोर्ट करने वाले पुलिस स्टेशनों की संख्या 2010 में 465 से घटकर 2022 में 176 रह गई।

आरओ-एआरओ व पुलिस परीक्षा को रद्द करे सरकार

संवाददाता, लखनऊ। युवा मंच ने राज्यपाल आनंदी बेन पटेल को पत्र प्रेषित कर आरओध्एआरओ और पुलिस भर्ती पेपर लीक प्रकरण में पुनर्परीक्षा आयोजित कराने और सीबीआई जांच करा शिक्षा माफ्मिाओं समेत अन्य दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। युवा मंच संयोजक राजेश सचान ने कहा कि पूर्व में भर्तियों में हुई धांधली व पेपर लीक मामलों में शिक्षा माफ्मिाओं समेत भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों पर प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई उल्टे सीएम योगी आदित्यनाथ चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता व भ्रष्टाचार मुक्त होने का प्रोपेगैंडा करते रहे। इसी तरह का प्रचार सरकारी नौकरी व रोजगार सृजन को लेकर किया जा रहा है। युवा मंच व संयुक्त युवा मोर्चा द्वारा लगातार प्रदेश में 6 लाख रिक्त पदों को तत्काल भरने, चयन प्रक्रिया में भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए समुचित कदम उठाने की मांग की गई। लेकिन युवाओं की वाजिब मांगों को अनसुना कर दिया गया उल्टे शांति पूर्ण व लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलनों पर बर्बर दमन ढहाया गया। जिस तरह से आरओ-एआरओ व पुलिस परीक्षा में धांधली हुई, यह अभूतपूर्व है । इसे लेकर युवाओं में जबरदस्त रोष व्याप्त है और हजारों छात्र आंदोलन कर रहे हैं लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लाखों युवाओं के भविष्य से जुड़े इतने गंभीर मामले में चुप हैं।

आम आदमी पार्टी के बढ़ते जनाधार से दहशत में मोदी - दिनेश सिंह पटेल

संवाददाता, लखनऊ। आम आदमी पार्टी के उत्तर -प्रदेश महासचिव दिनेश सिंह पटेल नें बयान जारी करते हुए कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक के सबसे कमजोर प्रधानमंत्री साबित हुए हैं और सत्ता की लोलुपता में इतना ज्यादा गिर गए हैं कि किसी भी प्रकार सत्ता पाना चाहते हैं। दिनेश सिंह पटेल ने बताया कि आम आदमी पार्टी की विभिन्न राज्यों में कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे की स्थिति साफहो रही है तो मोदी जी को लग रहा है कि अब उन्हें सत्ता से बाहर जाने से कोई नहीं रोक सकता तो वह ईडी और सीबीआई के माध्यम से ष्आपष् के मुखिया अरविन्द केजरीवाल जी को गिरफ्तार करने के लिए सक्रिय हों गये हैं।

हाई कोर्ट ने सूचना आयोग में रिक्तियों पर सरकार से जवाब मांगा

संवाददाता, लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने आजाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर तथा डॉ.नूतन ठाकुर द्वारा उत्तर प्रदेश सूचना आयोग में मुख्य सूचना आयुक्त सहित चार सूचना आयुक्तों की रिक्ति के खिलाफदायर याचिका पर उत्तर प्रदेश सरकार से चार सप्ताह में जवाब मांगा है। यह आदेश जस्टिस विवेक चौधरी और जस्टिस ओम प्रकाश शुक्ला की बेंच द्वारा किया गया। दोनों ने अपनी याचिका में कहा था कि उत्तर प्रदेश सरकार ने 20 नवंबर 2023 को इन रिक्तियों को भरने के लिए ई आवेदन मांगे थे, जिसमें 19 दिसंबर 2023 तक आखिरी तारीख दी गई थी। इसके दो महीने बीतने के बाद भी अब तक सरकार द्वारा कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अभी आयोग में कुल पांच रिक्तियां हैं और 26 फरवरी को आयोग के सारे सूचना आयुक्त रिटायर हो जाएंगे, जिसके बाद आयोग पूरी तरह खाली हो जाएगा। अमिताभ और नूतन ठाकुर ने इसे गंभीर स्थिति बताने बताते हुए हाईकोर्ट से राज्य सरकार को तत्काल इन रिक्तियों को भरे जाने के निर्देश देने की प्रार्थना की थी।

युवाओं को सशक्त बनानारू भारतीय सेना ने युवा अग्निवीर अभ्यर्थियों के लिए पंजीकरण विंडो खोली

संवाददाता, लखनऊ। भारत के गतिशील युवाओं की क्षमता को समाहित करने के लिए, भारतीय सेना ने 17 1ध्2 से 21 वर्ष की आयु के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए अपनी पंजीकरण विंडो खोलने की घोषणा की है। 13 फरवरी 2024 से 22 मार्च 2024 तक, युवा व्यक्ति सम्मानित भारतीय सेना में अग्निवीर भर्ती के माध्यम से देश की सेवा की दिशा में एक परिवर्तनकारी अवसर का लाभ उठा सकते हैं। अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर टेक्निकल, अग्निवीर ट्रेड्समैन (8वीं और 10वीं), और अग्निवीर ऑफिस असिस्टेंटध्स्टोर कीपर टेक्निकल सहित विभिन्न भूमिकाओं के लिए पंजीकरण अब खुला है। इच्छुक अभ्यर्थियों से आग्रह किया जाता है कि अपनी वांछित श्रेणी में आवेदन करने से पहले अपने पात्रता मानदंडों की अच्छी तरह से समीक्षा कर लें। नई भर्ती प्रक्रिया के तहत, अभ्यर्थियों को रैली में भाग लेने के लिए सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) मेरिट सूची में उत्तीर्ण होना और स्थान सुरक्षित करना होगा। इस प्रकार, सभी उम्मीदवारों के लिए जेआईए वेबसाइट पर पंजीकरण करना और ऑनलाइन सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) के लिए आवेदन करना अनिवार्य है, जो राष्ट्र की सेवा करने के उनके सपने की दिशा में महत्वपूर्ण पहला कदम है।

सनातन महासभा की 122वी मां गोमती महाआरती का आयोजन

संवाददाता, लखनऊ। सनातन महासभा की ओर से झूलेलाल वाटिका, गोमती तट पर प्रत्येक पूर्णिमा पर आयोजित माघी पूर्णिमा पर आयोजित सनातन महा समागम एवं 122वी आदि गंगा माँ गोमती महाआरती का आयोजन शुक्रवार को किया गया। मंगलाचरण, स्वस्तिवाचन, पुष्पांजलि व शंखनाद के साथ हरिद्वार की तर्ज पर 07 भव्य मंचो से पूज्य अपरिमेह श्यामदास जी महाराज, पूज्य स्वामी आनंद नारायण जी, हंसानन्द जी, देवेंद्र शुक्ल के सानिध्य में हुई। महाआरती में मृदंग, मंजीरा, ढोल, तासे, शंख का खूब प्रयोग किया गया। अध्यक्ष डॉ. प्रवीण ने बताया कि बच्चों द्वारा विभिन्न देवताओं के रूप में महाआरती के पूर्व भजन संध्या आयोजन पंडित शिव कुमार शर्मा व उनके कलाकारों द्वारा तथा श्री राम विवाह का भव्य मंचन अमित दीक्षित श्रामजीश, के उनके 45 कलाकारों के संयोजन में हुआ। कार्यक्रम का आरंभ रिद्धि सिद्धि के दाता सुनो गणपति..., और वेदांत व प्रद्युम्न की 06 मिनट संगीत मयी श्रीराम कथा से हुआ।

एकेटीयू के छात्र बन सकते हैं मैकेनिकल इंजीनियर

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। डॉ0 एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के बीटेक मैकेनिकल, प्रोडक्शन एवं इंडस्ट्रीयल के छात्र नामी कंपनी पीटीसी इंडस्ट्रीज प्रा0 लि0 में मैकेनिकल इंजीनियर और ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी बन सकते हैं। कंपनी इसी महीने कैंपस प्लेसमेंट कराने जा रही है। जिसमें शामिल होने के लिए छात्र 25 फरवरी तक पंजीकरण करा सकते हैं। ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट विभाग की ओर से आयोजित कैंपस प्लेसमेंट में चयनित छात्रों को आकर्षक पैकेज देगी। माननीय कुलपति प्रो0 जेपी पांडेय के निर्देशन में इस कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन 27 फरवरी को होगा। इसमें 2022-23 बैच के पासआउट छात्र हिस्सा ले सकते हैं। कैंपस प्लेसमेंट में शामिल होने के लिए छात्रों को पंजीकरण कराना होगा। कंपनी की ओर से पर्सनल इंटरव्यू टेक्निकल टेस्ट लिया जाएगा। सफल छात्र को कंपनी की ओर से मैकेनिकल इंजीनियर और ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी के रूप में लखनउ में नियुक्त किया जाएगा। चयनित छात्र को कंपनी की ओर से प्रशिक्षण के दौरान सालाना दो लाख पचास हजार रूपये और ग्रेड ए कॉलेज के छात्रों को पद के अनुसार तीन लाख 50 हजार रूपये दिया जाएगा। प्रशिक्षण पीरियड 12 महीने का रहेगा। चयनित छात्र को अपनी फील्ड में अच्छी पकड़ होना जरूरी है। टेउनिंग एंड प्लेसमेंट विभाग की डीन प्रो0 अरूमिणा वर्मा के नेतृत्व में इस कैंपस प्लेसमेंट का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि इसमें छात्र शामिल होकर अपना भविष्य बना सकते हैं। कंपनी में चयनित छात्र को काफी अच्छी सुविधाएं मिलेंगी।

मिशन नवशक्ति की रंगीन मछली की पाठशाला

रंगीन मछलियों का उत्पादन महिलाओं को आत्मनिर्भर बना सकता है : डा यू के सरकार

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। महिलाए रंगीन मछली का उत्पादन कर धनकुट्टी ग्राम का माडल ग्राम बना सकती है व अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर कर बना सकती हैं। यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो लखनऊ के निदेश डा यू के सरकार ने मिशन नवशक्ति कार्यक्रम के तहत आज 50 महिलाओं को रंगीन मछली की पाठशाला कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने सभी 50 प्रतिभागी महिलाओं को एक्वेरियत और उसमें लगनें वाली सामग्री का वितरण किया। उन्होने सभी 50 महिलाओं को एक्वेरियम बनाने में सहायक उपकरण भी सौंपे। बराबंकी के मसौली अंतर्गत ग्राम धनकुट्टी में कार्यशाला के तीसरे और अंतिम दिन महिलाओं के गांव

जा कर उनके समूह के आधार पर रंगीन मछलियों के छोटे और किफायती तालाब बनाने के लिए चिन्हित किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो लखनऊ के मिशन नवशक्ति कार्यक्रम के तहत 50 महिलाओं को रंगीन मछली की पाठशाला कार्यक्रम के तीसरें और अतिंम दिन महिलाओं को मोली और गप्पी प्रजाति की मछलियों को पालने की जानकारी दी गयी। पाठशाला के दौरान मत्स्य विशेषज्ञ इंद्रमणि राजा ने महिलाओं से सीसे के एक्वेरियम बनाने और मछलियों को बिना दाम खर्च किये रखरखाव जी जानकारी दी। पाठशाला में इंद्रमणि राजा ने बताया कि रंगीन मछिलयों के लिए कारोबारियों को बंगाल और तमिलनाडु पर आश्रित होना पड़ता है और अगर महिलाए अपने गांव में रंगीन मछलियों का विकास करें तो महिलाएं रंगीन मछलियों का उत्पादन का आर्थिक तौर पर मजबूत हो सकती है। कार्यक्रम की नोडल अधिकारी डा पूनम जयंत सिंह ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो लखनऊ की तरफसे इस प्रकार के कार्याक्रमों को आयोजित कर एससीएसटी समूह की महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनके आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण और भ्रमण को आयोजित किया जाता है। उन्होंने बताया कि रंगीन मछलियों का व्यापार बहुत बढ़ रहा है और महिलाएं इसको सीख कर अपनी आय को बढ़ा कर स्वय आत्मनिर्भर बन सकती है।

थाईलैंड में 'कुशीनगर महापरिनिर्वाण स्थल' बना आकर्षण का केन्द्र

बुद्धभूमि कार्यक्रम' में यूपी पर्यटन ने बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल थीम पर बनाया पवेलियन

बौद्ध तीर्थ स्थलों पर पर्यटकों को आधुनिक सुविधा प्रदान कर रही सरकार : जयवीर

चर्चित राजनीति/संवाददाता

लखनऊ। थाईलैंड में आयोजित बुद्धभूमि कार्यक्रम के माध्यम से उत्तर प्रदेश पर्यटन थाईलैंडवासियों को कुशीनगर महापरिनिर्वाण स्थल के दर्शन करा रहा है। कार्यक्रम में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल थीम पर पवेलियन का निर्माण किया गया है। थाईलैंडवासीयों को इसके माध्यम से उत्तर प्रदेश के छह प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों की जानकारी दी जा रही है। पवेलियन में कुशीनगर, सारनाथ, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, संकिसा और कौशांबी तीर्थ से जुड़ी जानकारी पुस्तक, यात्रा वृतांत और स्टॉल आदि के माध्यम से प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम उद्घाटन के अवसर पर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि हम उस देश के वासी हैं, जहां भगवान बुद्ध का अवतरण हुआ जिन्होंने विश्व को शांति और अहिंसा की राह दिखाई है। उनकी इसी राह पर चलकर विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। मैं ऐसे प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं जहां मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया तो वहीं भगवान बुद्ध ने इसी पावन धरती को तप, उपदेश और परिनिर्वाण के लिए चुना।पर्यटन मंत्री ने कहा, सीएम योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में पर्यटन का तेजी से विकास हो रहा है। इसके लिए सरकार निजी निवेशकों को भरपूर और अच्छा अवसर उपलब्ध करा रही है। बौद्ध तीर्थ स्थलों में आधुनिक सुविधा प्रदान करने के लिए प्रदेश सरकार विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर रही है। पर्यटन विभाग ने कपिलवस्तु, सारनाथ, श्रावस्ती, कौशांबी, कुशीनगर,संकिसा और देवदह में बड़े पैमाने पर पर्यटन विकास कार्य किए जा रहे हैं। इन तीर्थों पर हेलीपोर्ट समेत अन्य मूलभूत पर्यटन सुविधाओं और पर्यटन गेस्ट हाउस परियोजनाओं के विकास में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप यानी पीपीपी अवसरों के लिए आमंत्रित किया है। हमारा प्रयास है दुनियाभर से बौद्ध श्रद्धालु

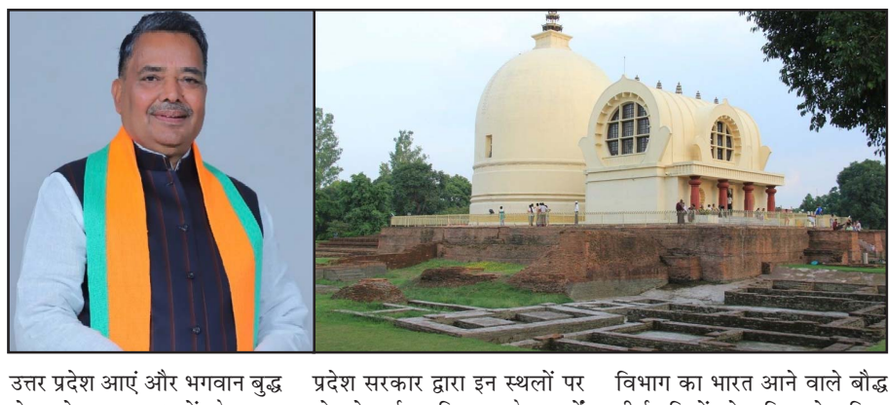

उत्तर प्रदेश आएं और भगवान बुद्ध से जुड़े पावन स्थलों के साथ अयोध्या, काशी समेत अन्य पर्यटन स्थलों का भ्रमण करें।कार्यक्रम में पर्यटन व संस्कृति विभाग का प्रतिनिधित्सव कर रहे प्रमुख सचिव मुकेश कुमार मेश्राम ने थाईलैंडवासियों को उत्तर प्रदेश आने और प्रमुख बौद्ध स्थलों के दर्शन को आमंत्रित किया। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा इन स्थलों पर हो रहे पर्यटन विकास के कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। निवेशकों को लुभाने के लिए उत्तर प्रदेश स्थित बौद्ध धर्म से संबंधित विभिन्न जगहों में निवेश के अवसर और व्यवसाय संभावनाओं से जुड़ी जानकारी दी। भारत में हर वर्ष बड़ी संख्या में बौद्ध श्रद्धालु आते हैं। ऐसे में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग का भारत आने वाले बौद्ध तीर्थयात्रियों को अधिक से अधिक अपनी ओर आकर्षित करने पर विशेष जोर है। प्रदेश सरकार का प्रयास है कि दुनिया को बौद्ध स्थलों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध कराई जाए। पर्यटन बढ़ने के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

सन साइन स्कूल प्रबंधन द्वारा दो दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ आयोजन, टीम आजम बनी विजेता तो मैन-ऑफ-द-मैच रहे अनुकल्प

चर्चित राजनीति/संवाददाता

हरदोई। जनपद के कछौना नगर स्थित प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान सन साइन कॉन्वेंट स्कूल व सन साइन जूनियर हाईस्कूल के तत्वावधान में नगर के सेठ आदर्श भूरामल इंटर कॉलेज के मैदान में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दो दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। गुरुवार से शुरू हुए क्रिकेट टूर्नामेंट का आदर्श इंटर कॉलेज के प्रधानाध्यापक महेंद्र पाल सिंह व योगेश कुमार सिंह ने फीता काटकर शुभारंभ किया। द्वितीय दिवस शुक्रवार को क्रिकेट टूर्नामेंट में विजेता टीम के कप्तान मोहम्मद आजम को मुख्य अतिथियों द्वारा ट्राफी व मेडल देकर सम्मानित किया गया। वहीं इस क्रिकेट टूर्नामेंट के मैन ऑफद मैच/सीरीज रहे अनुकल्प को स्कूल प्रबंधन ने बैट देकर उत्साहवर्धन किया। सन साइन स्कूल प्रबंधन के द्वारा इस क्रिकेट टूर्नामेंट में कक्षा-3 से लेकर कक्षा-8 तक की टीमों ने भाग लिया। शुक्रवार को हुए फाइनल मुकाबले में कक्षा-7 की टीम अपने कप्तान अरिजीत सिंह व कक्षा-5 की टीम अपने कप्तान मोहम्मद आजम के सुपरविजन में मैदान पर उतरीं।

क्षेत्रीय विधायक से ग्राम प्रधान ने सामुदायिक केंद्र/बारात घर की मांग की

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कछौना, हरदोई। वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्र में सांस्कृतिक केंद्र व बरात घर व सामुदायिक केंद्र की निशांत आवश्यकता है। क्योंकि विद्यालयों व ग्राम सचिवालय में वैवाहिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर प्रतिबंध है। वैवाहिक कार्यक्रम के कारण विद्यालयों व ग्राम सचिवालय का प्रांगण प्रभावित होता था। विद्यालयों के भवनों की दशा खराब हो जाती थी। वैवाहिक कार्यक्रम होने के कारण नौनिहालों का शिक्षण कार्य प्रभावित होता था। ग्रामीण क्षेत्र में बरात घर न होने के कारण आम जनमानस के सामने संकट खड़ा हो गया है। ग्रामीणों के सामने समस्या खड़ी हो गई है। उनकी माली हालत यह नहीं है कि वह कस्बा क्षेत्र में जाकर मैरिज लॉन किराए पर लेकर कार्यक्रम संपन्न कर सके। ग्रामीणों की मांग पर विकासखंड कछौना की ग्राम सभा पुरवा के ग्राम प्रधान छविनाथ मौर्य ने क्षेत्रीय विधायक रामपाल वर्मा से ग्राम सभा में बारात घर बनवाने की मांग की। जिस पर विधायक ने ग्राम प्रधान को आश्वासन दिया, ग्रामीणों की मांग को ध्यानगत रखते हुए शासन को अवगत कराते हैं, सरकार से विशेष बजट धनराशि स्वीकृत करके ग्राम सभा में सामुदायिक केंद्रध्बरात घर बनवाया जाएगा। जिसमें ग्रामीण सांस्कृतिक कार्यक्रम व वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न कर सके।

सुबह की अघोषित बिजली कटौती से उपभोक्ता परेशान, मण्डल अध्यक्ष ने ऊर्जा मंत्री को लिखा पत्र

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कछौना, हरदोई। वर्तमान समय में सुबह 6. 00 बजे से 9. 00 बजे तक अघोषित कटौती से उपभोक्ता व विद्यार्थी परेशान है। सुबह की कटौती से पूरे दिन की दिनचर्या प्रभावित होती है। आम जनमानत के सामने अध्यापन, दैनिक क्रियाकलाप प्रभावित है। उपभोक्ताओं की मांग पर मण्डल अध्यक्ष नवीन पटेल ने ऊर्जा मंत्री को पत्र लिखकर सुबह की अघोषित कटौती को बंद करने की मांग की। मण्डल अध्यक्ष नवीन पटेल ने ऊर्जा मंत्री को लिखे पत्र में अवगत कराया बोर्ड परीक्षा चल रही है। ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी सुबह की पढ़ाई करते हैं। सुबह वातावरण में शांति होती है। जिससे पढ़ाई में ज्यादा ध्यान लगता है। सुबह की कटौती के कारण पढ़ाई प्रभावित होती है। वही गृहस्थ, व्यवसाय, नौकरी पेशा के लोगों का सुबह से दैनिक क्रियाकलाप की शुरुआत होती है। सुबह की अघोषित विद्युत कटौती से दैनिक क्रियाकलाप प्रभावित होता है। जिससे उत्साह फीका पड़ जाता है। सुबह की शुरुआत अच्छी न होने से उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। आमजन मानस व विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यांगत रखते हुए जनहित में सुबह की अघोषित विद्युत कटौती को बंद कर आपूर्ति चालू रखने की मांग की।

केंद्रीय विद्यालय रायबरेली में मनाया गया विश्व चिंतन दिवस

चर्चित राजनीति/संवाददाता

रायबरेली। पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय में को स्काउट आंदोलन के प्रणेता लार्ड बेडेन पॉवेल एवं उनकी पत्नी लेडी ओल्वे पावेल की जयंती विश्व चिंतन दिवस के रूप में मनाई गई। पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय गोरा बाजार रायबरेली में भारत स्काउट-गाइड यूनिट प्रभारी इंद्रपाल व मिनेश सिंह एवं कब्स - बुलबुल प्रभारी पी के सिंह व व उपासना सिंह के सहयोग से लार्ड वेडेन पॉवेल का जन्मदिन विश्व चिंतन दिवस के रूप में मनाया गया। विदित हो कि यह दिन अर्थात 22 फरवरी स्काउट गाइड के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण दिवस होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य संजय कुमार श्रीवास्तव, उप- प्राचार्य राजेश त्रिपाठी एवं रमेश चंद्र दुबे, प्रधानाध्यापक प्रथम पाली आरबी शर्मा एवं प्रधानाध्यापक द्वितीय पाली कमलेश कुमार द्वारा लार्ड वेडेन पॉवेल के चित्र पर माल्यार्पण करके किया गया। ततपश्चात इन अतिथियों को स्काउट गाइड का स्कार्फपहनाकर स्काउट आंदोलन में शामिल किया गया। स्काउट मास्टर एस के दुबे व संगीत शिक्षक आशुतोष मिश्र के नेतृत्व में सर्वधर्म प्रार्थना हुई, जिसमें बच्चों ने सभी धर्मों की प्रार्थना प्रस्तुत की। स्काउट-गाइड ध्वज फहराने के बाद स्काउट- गाइड्स व कब्स - बुलबुल ने मुख्य अतिथि को सलामी दी। अतिथियों ने बुलबुल वृक्ष का अवलोकन किया एवं बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर कब्स और बुलबुल के लिए चित्रकला, बुलबुल वृक्ष सजावट, समूह नृत्य व समूह गायन प्रतियोगिता कराई गई। जिसमे नृत्य व गायन में द्वितीय पाली के कब्स व बुलबुल ने प्रथम एवं प्रथम पॉली के बच्चों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किये जबकि बुलबुल वृक्ष सजावट में प्रथम पॉली प्रथम स्थान तथा द्वितीय पॉली द्वितीय स्थान पर रही। विजेताओं को उप-प्राचार्य एवं प्रधानाध्यापकद्वय ने श्रीमती उपासना सिंह व पूनम शुक्ल के सहयोग से पुरस्कार भी प्रदान किया। इस अवसर पर प्राचार्य ने सभी स्काउट्स, गाइड्स से टीम भावना के साथ-साथ ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, जिम्मेदार, विनम्र, सहकारी, वफादार, साहसी बनने की अपील की, ताकि वे राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकें। उप प्राचार्य ने बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों को भी सहयोग एवं टीम भावना के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आर बी शर्मा प्रधानाध्यापक प्रथम पाली ने सभी स्काउट्स और गाइड्स से कहा कि विश्व की समस्या के बारे में सोचना चाहिए और बेहतर दुनिया के लिए अपना योगदान देना चाहिए, जिसके लिए हमें स्वानुशासन में रहना जरूरी है। कमलेश कुमार प्रधानाध्यापक द्वितीय पॉली ने विश्व चिंतन दिवस पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन पूनम शुक्ला ने किया। कार्यक्रम के अंत मे सभी कब्स बुलबुल व स्काउट-गाइड सदस्यों के लिये स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था विद्यालय द्वारा की गई थी। सभी ने छक कर भोजन का आनंद लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में दोनों पॉली के सभी शिक्षकों का सराहनीय योगदान रहा।

लाभार्थी संपर्क अभियान कार्यशाला की बैठक सम्पन्न

संवाददाता, खीरों, रायबरेली। शुक्रवार को ब्लाक सभागार में हुई बैठक में मुख्यतिथि खीरों मण्डल के प्रवासी प्रेम पाण्डेय रहे वही विशिष्ट अतिथि भाजपा मण्डल अध्यक्ष शिवराम सिंह रहे वही माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया गया। खीरों मण्डल के लाभार्थी संपर्क अभियान कार्यशाला की बैठक की। उन्होंने लाभार्थी संपर्क अभियान में लाभार्थियों से संपर्क कर सभी जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में चर्चा करते हुए नमो ऐप व सरल ऐप डाउनलोड कराने के लिए प्रशिक्षित किया। वही कार्यक्रम का संचालन मण्डल उपाध्यक्ष अशोक सिंह ने किया।इस मौके पर प्रवासी प्रेम पाण्डेय,मण्डल अध्यक्ष शिवराम सिंह,धुन्नी सिंह, मण्डल उपाध्यक्ष अशोक सिंह,मण्डल उपाध्यक्ष राजन सिंह,मण्डल उपाध्यक्ष शिवराज वर्मा,गौरव सिंह,व सेक्टर सयोंजक व पूरी मण्डल टीम मौजूद रही।

अवैध असलहे के साथ युवक को गिरफ्तार कर भेजा जेल

चर्चित राजनीति/संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। कस्बे के भीतर गाँव मोहल्ला स्थित मस्जिद के पास से पुलिस ने अवैध असलहे के साथ युवक को गिरफ्तार कर जेल भेजा है, बताया जा रहा है कि पकड़े गए युवक के विरुद्ध पूर्व में भी कई अपराधिक मुकदमे दर्ज है। गुरुवार की रात पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर सुरसती का पुरवा निवासी जगतपाल को गिरफ्तार कर लिया, तलाशी के दौरान उसके पास से 315 बोर का अवैध तमंचा व एक अदद जिंदा कारतूस बरामद की गई, जिसे शुक्रवार को पुलिस ने सम्बंधित धाराओं में केस दर्ज कर उसे जेल भेजा गया है। इस बाबत कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि अवैध असलहे के साथ युवक को गिरफ्तार कर जेल भेजा है, उस पर कई अपराधिक मुकदमे दर्ज है।

बीजेपी पिछड़ा वर्ग मोर्चा का सामाजिक सम्मेलन संपन्न

चर्चित राजनीति/संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। आगामी लोकसभा की तैयारियों कों लेकर भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा का सामाजिक सम्मेलन संपन्न हुआ। कस्बे के गांधी नगर स्थित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष राकेश पटेल,विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय मंत्री अभिलाष चंद्र कौशल एवं जिला अध्यक्ष राधेश्याम सोनी का जिला उपाध्यक्ष पवन साहू ने अंग वस्त्र व माला पहना कर स्वागत किया। क्षेत्रीय उपाध्यक्ष राकेश पटेल ने कहा की भाजपा ही ओबीसी समाज के हित के लिए काम कर रही। ओबीसी कों अन्य दलों ने सिर्फवोट बैंक समझ उपयोग किया हैं। कार्यक्रम के आयोजक ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष पवन साहू ने कहा की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कों तीसरी बार पीएम बनाने के लिए पूरे प्रदेश का ओबीसी मतदाता एकजुट हैं। इस दौरान पूर्व मंडल अध्यक्ष सूर्य प्रकाश वर्मा, सरदार फ्तेह सिंह, सभासद कमलेश कुशमेष, उमेश कुमार, राजेंद्र रस्तोगी, रमेश मौर्य, शिवकुमार यादव, विकास लोधी सहित दर्जनों भाजपाई मौजूद रहे।

विधानसभा अध्यक्ष अधिवक्ता सभा बनाए जाने पर सौरभ का हुआ जोरदार स्वागत

चर्चित राजनीति/संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। तहसील परिसर में समाजवादी पार्टी अधिवक्ता सभा द्वारा नवनियुक्त किए गए बछरावां विधानसभा अध्यक्ष सौरभ कुमार एडवोकेट का अधिवक्ताओं ने फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। जानकारी हो की प्रदेश अध्यक्ष अधिवक्ता सभा सिकंदर यादव एडवोकेट के निर्देशन में समाजवादी पार्टी प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल द्वारा सौरभ कुमार की बछरावां विधानसभा अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस अवसर पर नव नियुक्त समाजवादी अधिवक्ता सभा बछरावां विधानसभा अध्यक्ष सौरभ कुमार ने अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अधिवक्ता के हित में व उनके सम्मान के लिए हमेशा लड़ाई लड़ेंगे तथा किसी भी अधिवक्ता के साथ अन्याय नहीं होने देंगे। इस मौके पर अर्जुन सिंह, फिरोज अहमद, विजय कनौजिया, जितेन्द्र गौतम, सर्वेश गौतम, हर्षित चौधरी, राजेंद्र मौर्य, मोहम्मद जावेद, रमेश राजवंशी, बिंदेश राव, कन्धई लाल सहित भारी संख्या में अधिवक्तागण मौजूद रहे।

स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाताओं को किया गया जागरूक

चर्चित राजनीति/संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। डॉ अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में स्वीप कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे विद्यालय के छात्र छात्राओं को वोटर लिस्ट में नाम बढ़ाने तथा वोट प्रतिशत बढ़ाने के लिए जागरूक किया गया। कार्यक्रम में छात्रों ने मेहंदी प्रतियोगिता ,पोस्टर प्रतियोगिता मे भाग लेकर प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम में उपजिला अधिकारी सिद्धार्थ चौधरी ने कहा कि आप सबका एक-एक वोट प्रतिशत बढ़ाने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसलिए 18 वर्ष पूर्ण कर चुके छात्र छात्रा अपना नाम वोटर लिस्ट में बढ़ाएं ,तथा अपने गांव घर में लोगों को वोटर लिस्ट में नाम बनवाने के लिए प्रेरित कर मतदान जागरूकता कर वोट प्रतिशत बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि ऊंचाहार वोट प्रतिशत में प्रथम स्थान आने के लिए आप सब की सहयोग की विशेष आवश्यकता है। तहसीलदार दीपिका सिंह ने भी बच्चों को वोट प्रतिशत बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। सीओ अरुण कुमार नौहार ने भी कार्यक्रम को संबोधित कर देश के प्रति लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अपनी अपनी जिम्मेदारी निभाने की बात कही, उन्होंने कहा कि हम सब की जिम्मेदारी है ,कि18 वर्ष पूर्ण कर चुके युवा वोटर लिस्ट मे अपना नाम बढ़ाएं और लोकतंत्र को मजबूत बनाएं। ऊंचाहार ब्लॉक के खंड विकास अधिकारी कामरान नेमानी ने भी मतदान प्रतिशत बढ़ाने की बात कही। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी सुनील सिंह, कालेज प्राचार्य सहित काफी संख्या में बच्चे उपस्थित रहे।

चोरों ने विद्यालय का ताला तोड़कर लाखों रुपए कीमत के कंप्यूटर व अन्य सामान किया पार

चर्चित राजनीति/संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। क्षेत्र के प्रतिष्ठित शंभू नाथ यादव इंटर कालेज चिक मिलिक तीन माह से चोरों के निशाने पर है। चोरों ने तीन माह के अंदर दूसरी बार कालेज के कार्यालय को निशाना बनाते हुए हजारों का माल पार कर दिया है। कालेज के प्रधानाचार्य ने मामले की लिखित शिकायत कोतवाली में की है। रायबरेली प्रतापगढ़ जनपद की सीमा पर स्थित शंभू नाथ यादव इंटर कालेज में तीन माह पूर्व चोरों ने कालेज का ताला तोड़कर लाखों रुपए कीमत के कंप्यूटर और अन्य कीमती सामान उठा ले गए थे। मामले में पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की , जिससे चोरों के हौंसले बुलंद हो गए और इसका परिणाम यह हुआ कि गुरुवार की रात चोरों ने दूसरी बार कालेज के कार्यालय का ताला तोड़ डाला। कार्यकाय में रखा एक बैटरा, एक एलसीडी , दो डीवीआर, दो पावर सप्लाई उठा ले गए। यहीं नहीं चोरों ने कालेज में लगे दो सीसीटीवी कैमरा को भी तोड़ डाला। शुक्रवार की सुबह जब कालेज खोलने प्रधानाचार्य अर्जुन सिंह पहुंचे तब घटना की जानकारी हुई। उन्होंने कोतवाली में मामले की लिखित तहरीर दी है। इस बाबत कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि घटना की छानबीन की जा रही है जल्द ही चोरों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

रुधौली ब्लॉक में नहीं थम रहा है मनरेगा में भ्रष्टाचार

ग्राम पंचायत भरौली व ग्राम पंचायत छतरिया में मनरेगा में फर्जी हाजिरी से जुड़ा मामला

चर्चित राजनीति/संवाददाता

बस्ती। रुधौली शासनादेश के शक्त आदेश के बाद भी तकनीकी सहायक एवं रोजगार सेवक विकासखंड में बैठ कर गांधी छाप के लालच में दोनों टाइम एनएमएमएस पर फर्जी तरीके से हाजिरी अपलोड कर रहे हैं ताजा मामला जनपद बस्ती के रुधौली विकासखंड में कई ग्राम पंचायतो में एक ही टाइम एनएमएमएस फर्जी तरीके से हाजिर अपलोड करके भूगतान किया जा रहा है रुधौली विकासखंड के अधिकारियों द्वारा ग्राम पंचायत के कार्य में बांध ,नाला की खुदाई,रोड के दोनों तरफपटरी सफाई मिट्टी पटाई एवं केला,पपीता वृक्षारोपण के कार्य में कोई मजदूर नहीं कर रहे है। काम फिर भी फर्जी तरीके से विकासखंड रुधौली में धड़ल्ले से फर्जी हाजिरी जारी है। हाल ही में छतरीया, भरौली में फर्जी हाजिरी का मामला सामने आया लेकिन उच्च अधिकारी इसकी सुधि नहीं ले रहे है जिससे ग्राम पंचायतो में जमकर भ्रष्टाचार का खेल खेला जा रहा है। और सरकार के खजाने को अपना माल समझ कर ग्राम प्रधान एवं ब्लॉक के अधिकारी लूटने में लगे हुए है। इस सन्दर्भ में जब खंड विकास अधिकारी से बात किया गया तो उन्होंने बताया कि मामले को जांच कर उचित कार्रवाई करने की बात कही गयी अपितु एक सप्ताह बीत जाने के बाद भी बीडीओ साहब द्वारा अब तक कोई सार्थक कदम नहीं उठाया गया है। बीडीओ की सुस्ती के कारण दोनों ग्राम पंचायतों में धड़ल्ले से फर्जी तरीके से आनलाइन हाजिर अभी भी जारी है। वहीं भष्टाचारियो के हौसले बुलंद आये दिन भ्रष्टाचार का खुले आम अंजाम दे रहे है। और उच्च अधिकारियो को खुले आम चौलेंज कर रहे है।

बांगरमऊ सीएचसी के डाक्टरों ने एक्सरे कराया तो गले मे फंसा दिया सिक्का

चर्चित राजनीति/संवाददाता

उन्नाव। बांगरमऊ कोतवाली क्षेत्र के एक मोहल्ले में बीती देर शाम घर में एक बच्ची ने खेलने के दौरान पांच रुपये का सिक्का निगल लिया। कुछ देर में चीखने सीखने चिल्लाने लगी तो मौजूद परिजनों ने उसे उपचार के लिए सीएचसी ले गए। जहां डॉक्टरों ने एक्सरे किया तो उसके गले में सिक्का फंसा दिखाई दिया। सीएचसी में सुविधा न होने के साथ बच्ची के बेहतर उपचार के लिए डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार बांगरमऊ क्षेत्र के मल्लाहन पुरवा गांव निवासी राकेश की 6 वर्षीय बेटी ने खेल खेल में पांच रुपये का सिक्का मुंह में रखकर निगल लिया। इसके बाद सिक्का खाने की नली में जाकर गले में अटक गया। जानकारी होने पर राकेश द्वारा बेटी को बांगरमऊ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां पर कराए गए एक्सरे में सिक्का गले में अटका साफ-साफ दिखाई दिया। डॉक्टरों द्वारा सिक्का निकालने का प्रयास किया गया। किंतु सिक्का नहीं निकाला जा सका। इसके बाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया है।

दबंगों ने युवक को मारपीट कर किया घायल

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। देर रात घर के आसपास टहल रहे पड़ोसियों से पूछना युवक को महंगा पड़ गया, आरोप है कि दबंगों ने उसे मारपीट कर घायल कर दिया, पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्यवाई की मांग की है। मामला कोतवाली क्षेत्र के गाँव महेशीपुर मजरे अरखा का है, गाँव निवासी सनी का कहना है कि गुरुवार की देर रात पड़ोस के कुछ लोग उसके घर के पास टहल रहे थे, जब उसने इस बाबत उनसे पूछा तो आरोप है कि उन लोगों ने ईट पत्थर से मारकर उसे घायल कर दिया, शुक्रवार की दोपहर पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर दी है। इस बाबत कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच कराकर आवश्यक कार्यवाई की जायेगी।

प्रधान का आरोप ग्राम समाज की भूमि पर लेखपाल करवा रहे कब्जा

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। गांव की सरकारी बंजर जमीन को लेखपाल ने बेच दिया , इस भूमि पर चार लोग अवैध रूप से पक्का निर्माण कर रहे हैं , ग्राम प्रधान लगातार अधिकारियों से सरकारी जमीन बचाने की गुहार लगा रहा है , किंतु उसकी अधिकारी नहीं सुन रहे हैं। मामला क्षेत्र के ग्राम पंचायत कल्याणी के गांव नया पुरवा मजरे अड्डा का है। गांव भूमि संख्या 39 और 42 व 43 राजस्व अभिलेखों में ग्राम समाज बंजर दर्ज है। ग्राम प्रधान नागराज का आरोप है कि उनके गांव में तैनात लेखपाल ने इस भूमि को गांव के चार लोगों को बेंच दिया। यही नहीं जब चारों लोगों ने सरकारी भूमि पर निर्माण शुरू किया तो प्रधान को जानकारी हुई। उसने लेखपाल को अवैध निर्माण रोकने को कहा तो लेखपाल ने निर्माण रोकने से इंकार कर दिया। उसके बाद प्रधान लगातार अधिकारियों के चक्कर लगा रहा है , किंतु अधिकारी भी मामले में कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। प्रधान का कहना है कि इस तरह से सरकारी भूमि पर अवैध रूप से कब्जा किया जा रहा है , किंतु कोई सुनने तक को तैयार नहीं है।

सम्पादकीय

न्याय का ध्वज ऊंचा रहे

भारत के लोकतन्त्र की सबसे बड़ी खूबी यह रही है कि इसके चार पायों में एक स्वतन्त्र न्यायपालिका ने कभी भी न्याय का पलड़ा झुकने नहीं दिया है। बेशक इमरजेंसी के 18 महीनों के समय को हम अपवाद के रूप में देख सकते हैं। मगर कार्यपालिका या विधायिका यहां तक कि चुनाव आयोग भी जब अपनी जिम्मेदारी से गाफिल हुआ है तो न्यायपालिका ने दिशा दिखाने का काम किया है और लोकतन्त्र के ध्वज को ऊंचा फहराया है। चंडीगढ़ नगर निगम के महापौर के चुनाव में जो भी अन्यायपूर्ण कार्रवाई मतदान अधिकारी अनिल मसीह द्वारा हुई उसे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तियों ने न केवल सुधारा बल्कि मसीह पर मुकदमा चलाने की तजवीज पेश करके भी एक मिसाल कायम की जिससे आगे कभी भी कोई मतदान अधिकारी ऐसी बेशर्मी और बेहयायी करके लोकतन्त्र का मजाक न बना सके। यदि और साफशब्दों में कहा जाये तो सर्वोच्च न्यायालय ने अनिल मसीह पर लानत भेजने का काम किया है क्योंकि उसका काम भारत के लोकतन्त्र को पूरी दुनिया की निगाह में नीचे गिराने वाला था। जिस तरह उसने आप व कांग्रेस गठबन्धन के प्रत्याशी कुलदीप कुमार के पक्ष में पड़े आठ वोटों को अवैध घोषित किया था वह कार्रवाई नादिरशाही की याद दिलाती है। इसी वजह से सर्वोच्च न्यायालय ने पिछली सुनवाई में पूरे मामले को लोकतन्त्र की हत्या भी कहा था। मुख्य न्यायाधीश श्री डी.वाई. चन्द्रचूड़ ने अवैध किये गये आठ मतों को पूरी तरह से वैध मानते हुए कुलदीप कुमार को मेयर पद पर निर्वाचित घोषित करके ऐसी नजीर बनाई है जिसका अनुसरण लोकतन्त्र में आने वाली पीढिय्यों को करना पड़ेगा। मगर जिस तरह से आप पार्टी के तीन पार्षदों का पाला बदलवा कर और पहले बेइमानी से घोषित मेयर मनोज सोनकर से इस्तीफा दिलवा कर बाजी को अपने ही हक में रखने की जो राजनैतिक शतरंद बिछाई गई थी, उसे न्यायमूर्तियों ने तार-तार करते हुए पुराने पड़े वोटों की ही पुन: गिनती करा कर सिद्ध कर दिया कि न्याय को किसी भी चाल से दबाया नहीं जा सकता है और सच लाख पर्दों से भी बाहर आने की क्षमता रखता है। प्राकृतिक न्याय भी यही कहता था कि कुलदीप कुमार को विजयी घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें 16 के मुकाबले 20 वोट मिले थे। इन 20 वोटों में से ही आठ को अवैध घोषित करके अनिल मसीह ने हारे हुए प्रत्याशी मनोज सोनकर को विजयी बनाने का काम किया था। सर्वोच्च न्यायालय ने उन परिस्थितियों को आने ही नहीं दिया जिससे चंडीगढ़ के मेयर का चुनाव दोबारा कराया जाता। यदि ऐसा होता तो 36 सदस्यीय नगर निगम में दल बदल के बाद भाजपा के 19 वोट हो जाते और आप व कांग्रेस गठबन्धन के 17 वोट रह जाते जिससे पुन: मनोज सोनकर जीत जाते। विद्वान न्यायमूर्तियों ने प्राकृतिक न्याय की रूह से फैसला किया कि पुराने मतों की पुन: गिनती करायी जाये और विधायिका में खरीद-फरोख्त के भरोसे जो दल-बदल किया जाता है उस पर लानत फैंकी जाये। उन्होंने पुराने वोटों की ही गिनती करा कर वैध मतों को अवैध करार देने की प्रक्रिया को अलग करते हुए कुलदीप कुमार को विजयी घोषित किया। इससे यही साबित हुआ कि भारत का लोकतन्त्र कोई ऐसा दस्तावेज नहीं है कि इसे जो चाहे जिस तरह मोड़ कर अपनी जेब में रख ले। यह कुछ मान्य सिद्धान्तों और परंपराओं पर टिकी हुई शुद्ध प्रणाली है जिसका पालन करना हर राजनैतिक दल का परम कर्त्तव्य है। लोकतन्त्र के लिए लोकलज्जा इसीलिए जरूरी है जिससे जनता का इस पर हमेशा विश्वास जमा रहे।

चंडीगढ़ का संदेश

चंडीगढ़ में मेयर पद के चुनाव के दौरान अनुचित तौर-तरीके अपनाए जाने के आरोपों के बाद सामने आए नतीजे के रूप में जो अलोकतांत्रिक स्थिति उपजी थी, उसे शीर्ष अदालत के निर्णय ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। अब सवाल यह है कि जब एक नगर निगम के मेयर के चुनाव में इस स्तर तक धांधली हो सकती है तो बड़े चुनावों को लेकर राजनीतिक दल किस स्तर तक तक जा सकते हैं? यहां सवाल सत्तारूढ़ राजनीतिक दल पर तो है ही, प्रश्न इस केंद्र शासित प्रदेश के उन आला अधिकारियों पर भी उठे हैं जिनकी जवाबदेही लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुचिता बनाये रखने के लिये थी। चंडीगढ़ नगर निगम का सवाल इसीलिये अधिक संवेदनशील हो जाता है, क्योंकि अन्य केंद्रशासित प्रदेशों की तरह यहां निर्वाचित जनप्रतिनिधि सभा नहीं है। इस प्रकरण से सवाल इस केंद्रशासित प्रदेश के प्रशासन में दखल रखने वाले केंद्र के बड़े अधिकारियों पर भी उठते हैं। विपक्षी दल इस दौरान चंडीगढ़ के प्रशासक और पंजाब के राज्यपाल के इस्तीफे को भी इस घटनाक्रम से उपजी प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं। जिसके निहितार्थ चुनाव के दौरान अपनायी गई प्रक्रिया के प्रति असंतोष के रूप में देखे गये। बहरहाल,अदालत के फैसले के बाद उन अधिकारियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए जिन्होंने सारे प्रकरण के प्रति आंखें मूंदे रखी। आखिर क्यों हमारे राजनीतिक दल भी चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता कायम नहीं रख पाते? क्यों हर मामले में कोर्ट को दखल देकर न्यायसंगत चुनाव का मार्ग प्रशस्त करना पड़ता है? यदि कोर्ट नगर निगम और पालिकाओं के छोटे मामलों में बार-बार हस्तक्षेप करने को बाध्य होगी तो क्या राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों को सुलझाने के लिये अदालत का समय प्रभावित नहीं होगा? कहीं न कहीं अदालतों में लगे वादों के अंबार के मूल में यह वजह भी है कि राजनीतिक दलों के पचड़े सुलझाने में कोर्ट का समय अनावश्यक रूप से व्यय होता है। माना जाना चाहिए कि चंडीगढ़ महापौर के मामले में दिया गया शीर्ष अदालत का फैसला भ्रष्ट राजनेताओं के लिये सबक ही नहीं, मार्गदर्शक नजीर भी साबित होगी। बहरहाल, शीर्ष अदालत के फैसले ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व को प्राणवायु दे दी है। दिल्ली के मुख्यमंत्री व आप सुप्रीमो ने पुरानी कहावत दोहराते हुए कहा भी कि 'सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं'। अब वे सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भाजपा पर नये सिरे से हमलावर हो रहे हैं। बल्कि वे भाजपा के आगामी लोकसभा चुनाव में जीत के दावों को लेकर भी सवाल उठा रहे हैं। दरअसल, चंडीगढ़ मेयर पद पर आप व कांग्रेस के साझे प्रत्याशी की जीत को अब इंडिया गठबंधन की जीत के रूप में दर्शाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पिछले महापौर चुनाव में ऊंच-नीच हुई थी, लेकिन मामला इतनी चर्चा में नहीं आया। अब तो राष्ट्रीय स्तर पर लोकसभा चुनाव को लेकर आप व कांग्रेस के तालमेल को लेकर नये सिरे से चर्चा होने लगी है।

चर्चित राजनीति

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

कार्यालय डी-206,सी, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

क्लासीफाइड्स

अपने साधारण व्यवसायिक वर्गीकरण विज्ञापन को क्लासीफाइड डिस्पले में आकर्षक डिजाइन के साथ प्रकाशित करवाएं

न्यूनतम साइज 4 सेमी X 3 सेमी

अधिकतम साइज 25 सेमी X 3 सेमी

दर- रु. 70रु/- प्रति स्क्वॉयर सेमी

क्लासीफाइडस विज्ञापन पर विशेष ऑफर
स्कीम 2+1, 3+2, 5+5, 10+12, 12+20
300 रू. 25 शब्दों तक, ऑफर 8 रु. प्रति शब्द अतिरिक्त 50 शब्द अधिकतम, वर्गीकरण डिस्पले 70 रु. प्रति स्क्वॉयर सेमी

शर्ते-विज्ञापन सर्वेक्षण नगद भुगतान पर एक साथ बुक कराना अनिवार्य है। विज्ञापन संबंधित कॉलम में ही प्रकाशित होंगे।

क्लासीफाइडस बुकिंग से संबंधित जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-
फोन नं0-0522-4075237

रोजगार सृजन पर मोदी सरकार की चुप्पी पर उठते सवाल

नन्तु बनर्जी

यह समझना मुश्किल है कि सरकार रोजगार सृजन पर चुप क्यों है जबकि वह साल-दर-साल बुनियादी ढांचे पर रिकॉर्ड खर्च का लगातार दावा कर रही है। नयी नौकरी चाहने वालों के लिए अवसर लगातार कम हो रहे हैं। पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए बेरोजगारी का लगातार बढ़ना चिंता का कारण बनता जा रहा है। वर्तमान में, देश का वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद विस्तार बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक हो सकता है, लेकिन स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा समय-समय पर जारी किये जाने वाले बेरोजगारी के आंकड़ों को देखते हुए यह रोजगारहीन आर्थिक विकास की तरह दिखता है, जबकि बुनियादी ढांचे पर होने वाला खर्च सीधे तौर पर रोजगार से जुड़ा होता है। सरकार ने देश के सतत विकास के लिए, 2019 से 2023 तक पांच साल की अवधि में बुनियादी ढांचे पर 14 खरब डॉलर खर्च करने की अपनी योजना के बारे में अक्सर बात की थी। इस तरह के बुनियादी ढांचे के खर्च से देश में स्वचालित रूप से लाखों नौकरियां पैदा होनी चाहिए थीं। यदि हां, तो सरकार बुनियादी ढांचे के खर्च से जुड़े रोजगार सृजन पर चुप्पी क्यों साधे हुए है? केंद्रीय वित्त मंत्री ने अपने वार्षिक बजट में रोजगार सृजन के आंकड़ों को क्यों छोड़ दिया? आर्थिक मामलों के विभाग के तहत वित्त मंत्रालय की बुनियादी ढांचा नीति और योजना प्रभाग, रेलवे, परिवहन विभाग, राजमार्ग और एक्सप्रेस वे के साथ-साथ सरकार के समग्र बुनियादी ढांचे के खर्च में सीधे शामिल है। रोजगार सृजन पर मंत्रालय की लंबी चुप्पी एक बड़ा रहस्य बनी हुई है। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के अनुसार, भारत के 2030 तक सात वित्तीय वर्षों में बुनियादी ढांचे पर लगभग 143 लाख करोड़ रुपये खर्च करने की संभावना है, जो 2017 और 2023 के बीच पिछले सात वित्तीय वर्षों में खर्च किए गए 67 लाख करोड़ रुपये से दोगुने से भी अधिक है। हालांकि, इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड आवंटन और परियोजनाओं के समय पर निष्पादन के बीच बहुत अंतर है। ऐसा प्रतीत होता है कि बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर तथाकथित बजट आवंटन और उनके कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी में कुछ गंभीर गड़बड़ी है। राष्ट्रीय बजट शायद ही परियोजना कार्यान्वयन में अत्यधिक देरी के बारे में बात करता है, जिसके कारण कई प्रमुख परियोजनाएं रद्द हो गईं और अन्य की लागत में भारी वृद्धि हुई। आधिकारिक रिपोर्टों से पता चलता है कि पिछले जुलाई माह तक लगभग 809 विलंबित परियोजनाओं की लागत में 4.65 लाख करोड़ रुपये से अधिक की वृद्धि हुई। सेंटर फॉरमॉनिटरिंग इंडियन इकानॉमी (सीएमआईई) की एक रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि 117 अरब डॉलर (7.63 लाख करोड़ रुपये) की परियोजनाएं वित्त वर्ष 2018 में खत्म कर दी गई। यह संदिग्ध है कि क्या बुनियादी ढांचा क्षेत्र पर वार्षिक बजट आवंटन वास्तविक परियोजना खर्च या गैर-खर्च की सही तस्वीर प्रदान करता भी है? रोजगार सृजन के पहलू पर सरकार की लगातार चुप्पी के पीछे यह एक कारण हो सकता है। इन परिस्थितियों में, जोरदार बुनियादी ढांचे के बजट आवंटन प्रस्ताव कुछ हद तक खोखले लग सकते हैं। 2023-24 के आखिरी पूर्ण बजट में बुनियादी ढांचे के लिए सरकार का पूंजी निवेश परिव्यय 33प्रतिशत बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपये (122 अरब डॉलर) कर दिया गया था। सरकार का रेलवे के बुनियादी ढांचे के विकास पर 2.40 लाख करोड़ रुपये (29बिलियन) खर्च करने का इरादा है, जो अब तक का सबसे अधिक परिव्यय और 2013-14 के आवंटन का लगभग नौ गुना होने का दावा किया गया है। अंतिम मील कनेक्टिविटी के लिए लगभग 100 महत्वपूर्ण परिवहन बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को 75,000 करोड़ रुपये (9बिलियन) के निवेश के साथ प्राथमिकता पर लेने के लिए पहचाना गया था, जिसमें निजी स्रोतों से 15,000 करोड़ रुपये (1.8बिलियन डॉलर) भी शामिल थे। इनका उद्देश्य बंदरगाह, कोयला, इस्पात, उर्वरक और खाद्यान्न जैसे क्षेत्रों को लाभ पहुंचाना है। इसके अतिरिक्त, सरकार ने 50 और हवाई अड्डों, हेलीपोर्टों, जल हवाई अड्डों और उन्नत लैंडिंग मैदानों को पुनर्जीवित करके क्षेत्रीय हवाई कनेक्टिविटी में सुधार करने की योजना बनाई है। उम्मीद तो यह थी कि सरकार 2024-25 के वोट-ऑन-अकाउंट (लेखानुदान) बजट में आम आदमी और विशेष रूप से करदाताओं को जानकारी देगी तथा रोजगार पर उनके प्रभाव के बारे में परियोजनाओं के कार्यान्वयन की स्थिति पर एक पूरी रिपोर्ट प्रदान करेगी। दुर्भाग्य से, पूंजी निवेश के उन बड़े-बड़े अनुमानों से परे बढ़ती बेरोजगारी की गंभीर हकीकत भी छिपी है। सरकार यह बताने में असमर्थ है कि इतने बड़े निवेश पर्याप्त नौकरियाँ पैदा करने में क्यों विफल हो रहे हैं। हर महीने नौकरी की तलाश कर रहे युवा पुरुषों और महिलाओं की बढ़ती संख्या से स्थिति और खराब होती जा रही है। सीएमआईई की रिपोर्ट के अनुसार, बेरोजगारी दर लगभग आठ प्रतिशत के आसपास मंडरा रही है, जो लगभग पांच साल पहले लगभग पांच प्रतिशत थी। बताया गया है कि रोजगार के लिए कानूनी उम्र के 900 मिलियन भारतीयों में से श्रम बल भागीदारी दर छह साल पहले 46 प्रतिशत से गिरकर 40 प्रतिशत हो गई है। विश्व बैंक द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, 2010 और 2020 के बीच, भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या 26 प्रतिशत से घटकर 19 प्रतिशत हो गई। सीएमआईई के एक अनुमान में कहा गया है कि 2022 तक महिला श्रम बल की भागीदारी घटकर नौ प्रतिशत रह गई थी। श्रम बाजार संकट के दौर से गुजर रहा है। नई सरकारी नौकरियां कम हैं। मांग-आपूर्ति का अंतर बढ़ रहा है। विभिन्न स्तरों पर सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के नेताओं सहित संगठित नौकरी दलालों द्वारा इसका शोषण किया जाता है। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में, केंद्रीय जांच एजेंसियों ने पूरे राज्य में फैले बड़े कैश-फॉर-नौकरी रैकेट का खुलासा किया है। राज्य-स्तरीय चयन परीक्षा पास करने वाले हजारों सरकारी वित्त पोषित स्कूलों में नौकरी के इच्छुक उम्मीदवार महीनों से धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं क्योंकि कथित भर्ती घोटाले के कारण उन्हें नौकरी नहीं मिली। पश्चिम बंगाल, देश के कई क्षेत्रीय पार्टी शासित राज्यों में से एक, तथा नौकरी की सबसे अधिक कमी वाले राज्यों में से एक है। बिहार, ओडिशा, झारखंड और उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग अन्य नौकरी-भूखे राज्यों में से हैं। बेटरप्लेस की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि व्यापक आर्थिक चुनौतियों और अनिश्चित आर्थिक माहौल के कारण 2022-23 में भारत में फ्रंटलाइन नौकरियों की संख्या में 17.5प्रतिशत की गिरावट आई है। बेटरप्लेस एशिया का सबसे बड़ा मानव पूंजी एसएएएस समाधान है जो उद्यमों को अपने फ्रंटलाइन श्रमिकों के संपूर्ण जीवनचक्र का प्रबंधन करने में सक्षम बनाता है। जाहिर है, भारत में मौजूदा बेरोजगारी की स्थिति का सरकार के बुनियादी ढांचे के निवेश के दावों से कोई संबंध नहीं है। जैसा कि पूरी दुनिया में देखा गया है, बुनियादी ढांचा निवेश रोजगार सृजन के लिए एक इंजन की तरह काम करता है। आर्थिक विकास की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश और नौकरी में वृद्धि के बीच संबंध महत्वपूर्ण है। बेहतर कनेक्टिविटी, रोजगार सृजन, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और जीवन की बेहतर गुणवत्ता बुनियादी ढांचे के विकास के कुछ प्रमुख लाभ हैं। सरकार का बड़ा बुनियादी ढांचा निवेश देश के आम नागरिकों के रोजगार सृजन और जीवन की गुणवत्ता जैसे क्षेत्रों में प्रदर्शन से मेल खाने में विफल रहता है। यह संभव है कि वास्तविक जमीनी निवेश बजटीय निधि आवंटन से काफी कम हो। इससे शायद यह समझा जा सकता है कि सरकार रोजगार सृजन पर चुप क्यों है।

क्या हम आजाद हैं?

सर्वमित्रा सुरजन

1989 में एक फिल्म आई थी मैं आजाद हूं। जब यह फिल्म आई थी, तब भारत को आजादी मिले 40 साल हो चुके थे। इन चार दशकों में देश ने कई उतार-चढ़ाव, गम और खुशी के पल देखे। इन सबके बीच लोकतंत्र और संविधान के संरक्षण का भाव फलता-फूलता रहा। उस दौर में समाज में एक बड़ी चिंता भ्रष्टाचार को मिटाने की थी और कई फिल्मों में इसे देश के लिए सबसे बड़ी बुराई के तौर पर प्रस्तुत किया जाता था, जिसके खात्मे के लिए नायक आगे आता है। तब तक न राम मंदिर के आंदोलन के लिए रथ यात्रा निकाली गई थी, न आम लोगों को इस बात का एहसास था कि बाबरी मस्जिद को तोड़ने का अपराध भी किया जा सकता है। उदारीकरण भी देश में तब तक नहीं आया था, इसलिए समाज के उच्च वर्गों की जिंदगियों और सरोकारों से मध्यमवर्गीय लोगों के सरोकार बहुत अलग थे। इसलिए तब इस फिल्म में जिस तरह सियासत, मीडिया और कारोबार जगत का गठजोड़ दिखाकर भ्रष्टाचार का नया रूप दिखाया गया, जिस अंदाज में आम आदमी के सवालों को उठाया गया, वो वास्तविकता से दूर होने लगे थे। फिल्म में मीडिया मालिक कहता है कि झूठ जोर से बोला जाए तो लोग उसे सच मान लेते हैं। वह झूठ के कारोबार से पहले मुख्यमंत्री और फिर दिल्ली की सत्ता पर बैठने की महत्वाकांक्षा पालता है, अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को कुचल देना चाहता है। उसकी निगाह में लोकतंत्र का कोई मोल नहीं है। आज से 35 साल पहले इस तरह की कहानी काफी हद तक नाटकीय लगी थी, क्योंकि लोकतांत्रिक समाज तो इस खुशफहमी को पाले हुए था कि हिटलरी सोच हिटलर की मौत की साथ ही खत्म हो चुकी है। देश तो यही मानकर चलता था कि अनेकता में एकता वाले भारत में नफरत कभी भी टिक नहीं सकेगी, भारत की हस्ती कभी मिट नहीं सकेगी। लेकिन आज 2024 के भारत को देखें तो लगता है कि जो कुछ 1989 में दिखाया गया, वह एक तरह से देश की भावी तस्वीर ही थी। पिछले 15 दिनों की कुछ घटनाओं को देखें। चंडीगढ़ मेयर के चुनाव में पीठासीन अधिकारी ने ही मतपत्रों में अपनी ओर से क्रॉस के निशान लगाकर आप और कांग्रेस के गठबंधन को हराया और भाजपा को जिता दिया। चूंकि सारा घटनाक्रम सीसीटीवी में कैद हो गया और आप ने इस मामले को अदालत में ले जाने की हिम्मत दिखाई, इस वजह से सच्चाई सामने आई। अब आप के कुलदीप कुमार को सुप्रीम कोर्ट ने चंडीगढ़ का मेयर बनाया है और पीठासीन अधिकारी अनिल मसीह पर कार्रवाई के आदेश दिए हैं। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले की सराहना हो रही है, लोग लोकतंत्र की रक्षा के लिए अदालत को धन्यवाद दे रहे हैं। लेकिन क्या वाकई यह प्रकरण खुश होने का है। क्या इस घटना को अंत भला तो सब भला कहकर भुलाया जा सकता है, या फिर इसे लोकतंत्र के लिए एक गहरी चुनौती मानते हुए हमेशा याद रखा जाना चाहिए? अदालत ने अनिल मसीह पर कार्रवाई के आदेश दिए हैं, लेकिन मसीह ने क्या अपने लिए वोटों से छेड़छाड़ की थी, या फिर किसी और के फायदे के लिए। वो कौन सी ताकतें हैं, जिन्होंने ड्यूटी पर तैनात एक अधिकारी से असंवैधानिक काम करवाए, क्या कभी उनकी शिनाख्त हो पाएगी। अदालत ने सुनवाई के दौरान वोटों की गिनती के आदेश दिए। क्या इसे सामान्य बात माना जा सकता है। क्योंकि चुनाव करवाने और वोट गिनवाने का काम तो चुनाव आयोग का है। अगर अदालतों में अब चुनाव के फैसले, वोटों की गिनती होने लगे, तो सोचिए कि लोकतंत्र किस बदहाली का शिकार हो चुका है। 30-32 वोट तो अदालत में गिन लिए गए, मगर लोकसभा चुनावों में 97 करोड़ मतदाताओं के वोट तो अदालत में नहीं गिने जा सकते, तो क्या निर्वाचन आयोग इस बात की गारंटी लेगा कि 97 करोड़ वोटों में कोई हेरफेर नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट तक चंडीगढ़ मेयर चुनाव का मामला पहुंचा तो इंसाफहो गया, लेकिन क्या देश में होने वाली हर नाइंसाफी अदालत की चौखट तक पहुंच पाएगी और क्या हर बार अदालत से इंसाफमिल पाएगा। अभी किसान फिर से दिल्ली की सीमा पार करने के लिए निकल पड़े हैं और एक बार फिर उन पर पंजाब-हरियाणा की शंभू सीमा पर आंसू गैस के गोले दागे गए। जब कांवड़ लेकर बेरोजगार नौजवानों की भीड़ सड़कों पर आती है और तब कानून व्यवस्था से लेकर दैनंदिन जीवन प्रभावित होता है, तब तो सरकार हेलीकाप्टर से उन पर फूल बरसाती है। मानो युवाओं के कांवड़ ढोने से देश की तरक्की हो रही हो, समृद्धि आ रही हो। लेकिन जिन किसानों की कड़ी मेहनत से देश का पेट भरता है, खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता आती है, उनके साथ दुश्मनों की तरह सलूक किया जा रहा है। किसान अपनी मेहनत का सही दाम ही मांग रहे हैं, मगर सरकार उनसे सौदेबाजी वाले अंदाज में बात कर रही है कि 23 नहीं हम केवल 5 फसलों पर एमएसपी देंगे, वो भी 5 साल के कांट्रैक्ट पर। इसके बावजूद किसान शांति के साथ ही आगे बढ़ने का प्रस्ताव रख रहे हैं और सरकार उन पर आंसू गैस के गोले गिराने के साथ दावा कर रही है कि किसान उसकी प्राथमिकता में हैं और वो बातचीत से समाधान निकालना चाहती है। अगर सरकार की नीयत साफहोती तो समाधान पहली वार्ता में ही निकल जाता, उसके लिए चार बार बैठने की जरूरत नहीं पड़ती। ऐसा लगता है मानो मैं आजाद हूं का खलनायक किरदार पर्दे से बाहर निकल कर जीवंत हो चुका है। जो अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को कुचल देना चाहता है। कभी छात्रों को कुचला जाता है, कभी किसानों को, कभी अग्निवीर के जवानों को। विपक्ष को सीधे-सीधे कुचलने की जगह उनमें फूट डलवाकर सत्ता की राह बनाई जा रही है। इस राह में नफरत, हिंसा और अराजकता सबका भरपूर इस्तेमाल हो रहा है। हिंदुस्तान में गांधी की धोती-चादर, और नेहरू की शेरवानी-गुलाब को देखकर पहचान का चलन था, लेकिन अब जालीदार टोपी, पगड़ी और बुरके से पहचान का विनाशकारी मंत्र भक्तों को दिया गया। इस मंत्र के ताजा शिकार बने आईपीएस अधिकारी जसप्रीत सिंह, जो प.बंगाल में उत्तरी 24 परगना जिले के संदेशखाली में अपने दल-बल के साथ ड्यूटी पर थे। संदेशखाली में टीएमसी नेता शाहजहां शेख पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामले में विवाद चल रहा है और भाजपा विधायक सुवेंदु अधिकारी यहां पहुंचे थे। उन्हें आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश जब जसप्रीत सिंह ने की, तो उन्हें खालिस्तानी कहा गया। जसप्रीत सिंह का आरोप है कि उन्हें भाजपा के लोगों ने खालिस्तानी कहा, क्योंकि उन्होंने पगड़ी पहनी हुई थी। सोशल मीडिया पर इस दौरान हुई झड़प का वीडियो वायरल है, जिसमें जसप्रीत सिंह कह रहे हैं कि धर्म के आधार पर उन पर टिप्पणी नहीं की जाए। अब तक मुसलमानों को उनके पहनावे और खान-पान के लिए निशाने पर लिया जा रहा था, बार-बार उनसे देशभक्तिसाबित करने कहा जाता है। ईसाइयों के खिलाफभी ऐसा ही माहौल बनाया जा चुका है। मिशनरी स्कूलों में हिंदुत्व को खतरा है, इसकी झूठी खबरें सोशल मीडिया पर फैलाई जाती हैं। और अब नफरत का विस्तार सिख कौम तक होता दिख रहा है। जसप्रीत सिंह अपने लिए जवाब देने में सक्षम हैं, लेकिन ऐसे कितने पगड़ीधारी हैं, जो अपना बचाव नहीं कर पाएंगे, तो क्या सरकार यह गारंटी दे पाएगी कि वह सबकी रक्षा करेगी। अगर सरकार ऐसी गारंटी नहीं दे सकती, तो फिर सत्तारुढ़ दल क्या फिर से सत्ता पर काबिज होने का अधिकारी है, यह लोगों को सोचना होगा। प्रधानमंत्री मोदी तीसरी बार सत्ता में आने का दावा तो कर ही चुके हैं, अभी उन्होंने ये तक कह दिया कि उन्हें विदेशों से आमंत्रण भी मिलने लगे हैं, क्योंकि वे भी भाजपा की जीत को लेकर आश्वस्त हैं। ये सीधे लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया को चुनौती देने वाला बयान हैं, क्योंकि इसमें मोदी साफतौर पर कह रहे हैं कि उन्हें ही नहीं दूसरे देशों के राष्ट्राध्यक्षों तक को चुनाव से पहले नतीजों का पता है। क्या ये भारत की आंतरिक नीति में दखलंदाजी नहीं है। अबकी बार ट्रंप सरकार बोलकर नरेन्द्र मोदी ने जो गलती की थी, यह उसी का दोहराव है। एक ही गलती बार-बार हो तो वो गलती नहीं आदत कहलाती है। क्या लोकतंत्र की उपेक्षा की आदत हम आजादी के अमृतकाल में देख रहे हैं। मैं आजाद हूं से लेकर क्या हम उस दौर में आ पहुंचे हैं, जहां हमें पूछना पड़े कि क्या हम आजाद हैं। या फिर नफरत, स्वार्थ और हिंसा की भ्रष्ट राजनीति के हम गुलाम बन चुके हैं।

बिगड़ती कानून व्यवस्था का खामियाजा पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था को उठाना पड़ रहा है

किसी भी देश में आर्थिक प्रगति को गति देने के लिए उस देश में सामाजिक शांति बनाए रखना अति आवश्यक है। यही शर्त किसी भी राज्य की आर्थिक प्रगति के सम्बंध में भी लागू होती है। भारत का पश्चिम बंगाल राज्य कुछ वर्ष पूर्व तक भारत में सबसे तेज गति से आर्थिक प्रगति कर रहे राज्यों के बीच अग्रिम पंक्ति में रहता आया है। परंतु, हाल ही के वर्षों में पश्चिम बंगाल में शांति भंग होती दिखाई दे रही है, इसका प्रभाव स्पष्टतरू इस राज्य के आर्थिक विकास पर भी विपरीत रूप से पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों से पश्चिम बंगाल में सामाजिक ताना बाना छिन्न भिन्न होता दिखाई दे रहा है। पूरे राज्य में अराजकता का माहौल बन गया है, विशेष रूप से सनातन संस्कृति का पालन करने वाले बंगाल के शांति प्रिय नागरिकों पर असामाजिक तत्वों द्वारा लगातार हमले किए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर हाल ही के समय में पश्चिम बंगाल के कई क्षेत्रों जैसे संदेशखाली इलाके में महिलाओं पर अत्याचार आम बात हो गई है। संदेशखाली, पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले का एक छोटा कस्बा है। यह बांग्लादेश की सीमा से सटा सीमावर्ती क्षेत्र भी है, जहां हिंदू अनुसूचित जातियों की आबादी बहुलता में है। संदेशखाली, पश्चिम बंगाल की उन 14 विधानसभा की सीटों में शामिल हैं जोकि भारत बांग्लादेश सीमा से सटीं हुई हैं। दुर्भाग्य से संदेशखाली सहित यह सभी विधानसभा सीटें अतिवादी संगठनों द्वारा समर्थित सुनियोजित षड्यंत्र का एक हिस्सा बन गई हैं। इन 14 सीमावर्ती विधान सभा क्षेत्रों में बांग्लादेश से अवैध घुसपैठ उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है। यहां की जनसांख्यिकी बदलने की साजिश का षड्यंत्र भी उच्च स्तर पर हो रहा है। वास्तव में, यह क्षेत्र पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी ैप्प् की आतंकी गतिविधियों के अलावा तमाम आपराधिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी विकसित हो रहा है। कुछ समय पहले तक संदेशखाली में मुस्लिम जनसंख्या नहीं के बराबर थी, लेकिन अवैध घुसपैठ के चलते यहां असामाजिक तत्वों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यह इलाका जनसांख्यिकी परिवर्तन की चपेट में आ गया है। इसमें सबसे बड़ी आबादी अब रोहिगियाई मुसलमानों की हो गई है। गौर करने वाली बात है कि विगत चुनावों के दौरान घटित सभी आपराधिक घटनाओं में अधिकतर अपराधी असामाजिक तत्व मुस्लमान ही पाए गए थे। यह मामले गौ-तस्करी से लेकर मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध हथियारों की तस्करी से जुड़े रहे हैं। इस तरह के सभी गैरकानूनी मामलों में मुस्लिम ही अभियुक्त पाए जाते हैं। संदेशखाली में जो कुछ सामने आया है अथवा आ रहा है, यह कोई पहली बार घटित हुई वारदातें नहीं है। हिंदू महिलाओं के साथ गैंग रेप की एक नहीं बल्कि सैंकड़ों घटनाएं सामने आ चुकी हैं। जिसके खिलाफ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने जब भी आवाज उठायी है तो परिणाम में उन्हें ही निशाना बनाना शुरू कर दिया गया है। न सिर्फ संघ के कार्यकर्ताओं की हत्या की गई है बल्कि उनके घरों को भी जला दिया गया है। इस क्षेत्र में हिंदू अनुसूचित जाति की महिलाओं एवं नाबालिग लड़कियों को इस इलाके के दबंग घुसपैठिए अपनी हवस का शिकार बनाने के उद्देश्य से जबरन उठा ले जाते हैं। इस क्षेत्र में तस्करी, मादक पदार्थ, हथियार, गोमांस आदि अपराधों में संलिप्त शेख शहंशाह जैसे मुस्लिम दबंगों का बोलबाला है। हाल ही में शेख शहंशाह के ठिकानों पर छापेमारी के लिए गई प्रवर्तन निदेशालय (म्क) की टीम पर उसके गुर्गों द्वारा हिंसक हमला भी किया गया था। इस हमले में म्क् के कई अधिकारी गम्भीर रूप से घायल हुए थे । इस इलाके में नौकरीध्रोजगार, विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ देने की आड़ में भी अनेक महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया है। पश्चिम बंगाल के विशेष इलाके संदेशखाली में घटित उक्त घटनाओं का वर्णन केवल उदाहरण के तौर पर किया गया है। वरना, पूरे पश्चिम बंगाल में ही आज अराजकता का माहौल है जो पश्चिम बंगाल की आर्थिक प्रगति को विपरीत रूप में प्रभावित कर रहा है। लगभग 1960 के दशक तक पश्चिमी बंगाल की औसत प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय स्तर पर औसत प्रति व्यक्ति आय से अधिक हुआ करती थी। पश्चिम बंगाल, भारत के प्रथम तीन सबसे अधिक धनी राज्यों में शामिल था। पहले दो राज्य थे- महाराष्ट्र एवं गुजरात। 1980 का दशक आते आते पश्चिम बंगाल की औसत प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय स्तर पर औसत प्रति व्यक्ति आय के लगभग बराबर तक नीचे आ गई थी। 1990 के दशक में राष्ट्रीय स्तर पर औसत प्रति व्यक्ति आय पश्चिम बंगाल की तुलना में तेज गति से आगे बढ़ने लगी और पश्चिम बंगाल का स्थान देश में 7वें स्थान पर आ गया। वर्ष 2000

संगम मेला क्षेत्र में डिजिटल मीडिया साक्षरता अभियान

चर्चित राजनीति/संवाददाता

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में संगम मेला क्षेत्र में डिजिटल मीडिया साक्षरता अभियान का आयोजन किया गया। दो दिनों तक चले इस साक्षरता कार्यक्रम में विभाग के छात्र-छात्राओं ने मेला में आये श्रद्धालुओं को डिजिटल भुगतान और बैंकिग सम्बन्धी सुरक्षा से अवगत कराया। इस दौरान विद्यार्थियों ने श्रद्धालुओं और दुकानदारों को डिजिटल मीडिया के प्रति साक्षर किया। उन्होंने लोगों को डिजिटल धोखाधड़ी के खिलाफ भी आगाह किया। इस अभियान के दूसरे भाग में इसी विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एडीजे सुभाष चंद्र मौर्य रहे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पत्रकारिता समाज का अहम पहलू है। ऐसे में पत्रकार को निष्पक्ष होकर समाचार देने चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि डिजिटल साक्षरता समाज की जरूरत है और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा चलाये इस अभियान की सराहना की। इस क्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो.अश्वजीत चौधरी ने कहा कि लोकतंत्र के सभी स्तंभों में मीडिया का स्थान अहम है। यह स्तंभ अन्य सभी स्तंभों को सहारा प्रदान करता है। समाज को जागरूक करने का काम मीडिया करती है। वर्तमान डिजिटल मीडिया के युग में मीडिया साक्षरता बहुत ही जरूरी है। संगोष्ठी के अंत में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों के साथ संवाद भी किया गया। संगोष्ठी में धन्यवाद ज्ञापन देते हुए डा.राम अवतार यादव ने कहा कि विभाग की ओर से समय-समय पर इस प्रकार के अभियान चलाए जाएंगे। इस दौरान विभाग के शिक्षक डा.हरिनाथ कुमार,डा. रवि सूर्यवंशी,डा.अमित शर्मा,डा. शिव गोपाल और विभाग के विद्यार्थी मौजूद रहे।

जन साहस संस्था द्वारा बबेरू ब्लॉक में एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय समन्वयक बैठक का किया गया आयोजन

संवाददाता, बांदा। जन साहस संस्था द्वारा बबेरू ब्लॉक के ब्लॉक सभागार में एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय समन्वयक कार्यशाला का आयोजन किया गया द्य कुल 118 ब्लॉक स्तरीय एवं ग्राम पंचायत स्तरीय स्टेक होल्डर्स उपस्थित रहें जिसमे बबेरू ब्लॉक से खंड विकास अधिकारी अजय कुमार पांडे, ब्लॉक प्रमुख रमाकांत , नायब तहसीलदार संतोष राम यादव , सहायक खंड विकास अधिकारी एवम प्रोबेशन कार्यालय से अनीता व, समस्त ग्राम सचिव , ग्राम प्रधान व समस्त पंचायत सहायक आदि उपस्थित रहे हैं तथा कार्यक्रम की शुरुआत सभी स्टेक होल्डर्स को बैच लगाकर की गई इसके पश्चात एमआरसी प्रोग्राम से जिला समन्वयक जीतेंद्र ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताया तथा इसके बाद जन साहस की अभी तक की यात्रा का विवरण साझा किया तथा किस प्रकार से जन साहस संस्था बहिष्कृत समाज में जागरूकता कार्य कर रही है तथा सुरक्षित पलायन को लेकर विस्तृत जानकारी साझा की गई इसके पश्चात खंड विकास अधिकारी अजय कुमार पांडे ने जन साहस के कार्य की प्रशंसा की तथा सभी ग्राम पंचायत के अधिकारियों को जन साहस के सहयोग करने को कहा एवम इसके पश्चात 'ब्लॉक प्रमुख रमाकांत ने जन साहस के कार्य और ब्लॉक लेवल में समन्वयक के साथ कार्य करने की बात कही और कहा कि जब भी आप पूर्व प्रस्थान प्रशिक्षण का आयोजन करें तो उसकी जानकारी ग्राम सचिव को जरूर दें ताकि वो भी कार्यक्रम में उपस्थित हो सकें इसके पश्चात जन साहस संस्था से फील्ड ऑफिसर ज्ञानदीप एवं रेखा ने जन साहस मजदूर हेल्पलाइन नंबर के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवम किस प्रकार से हेल्पलाइन कार्य करती है इसके विषय में जानकारी दी इसके पश्चात जन साहस संस्था के बाल संरक्षण अभियान के जिला समन्वयक सुशील कुमार एवम मैत्री प्रोग्राम से रामप्रकाश ने महिला हेल्पलाइन नंबर 180030002852 के बारे में जानकारी दी एवम महिला हिंसा रोकथाम में संस्था द्वारा किए जा रहे कार्य की जानकारी दी इसके पश्चात जिला प्रोबेंशन कार्यालय अनीता ने महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं पर जमीनी स्तर की भ्रांतियों को दूर किया तथा आवश्यक दस्तावेज के बारे में जानकारी साझा की इसके पश्चात 'जन साथी फैसिलिटेटर राजेश एवम जन साथी पूनम सिंह तथा महेश उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी साझा की जिसमे मातृत्व शिशु हितलाभ , कन्या विवाह सहायता, अटल आवासीय विद्यालय, अंत्योष्टि सहायता सहायता , संत रविदास शिक्षा सहायता योजना, मातृ वंदना योजना, जननी सुरक्षा योजना,मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना - ग्रामीण आदि के विषय में आवश्यक दस्तावेज के बारे में जानकारी दी।

संकल्प मल्टी चाइनीस रेस्टोरेंट का शुभारंभ

चर्चित राजनीति/संवाददाता

कानपुर। कानपुर किदवई नगर 40 दुकान स्थित सनी देव मंदिर के पास संकल्प चाइनीस मल्टी फैमिली रेस्टोरेंट की पहली शाखा का शुभारंभ हुआ कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए रेस्टोरेंट के प्रोपराइटर शोभित अग्रवाल ने बातचीत करते हुए बताया कि आज हमारे नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ क्षेत्रीय भाजपा विधायक महेश त्रिवेदी ने फीता काटकर किया संकल्प रेस्टोरेंट की कानपुर मे पहली शाखा है यह रेस्टोरेंट पूर्ण रूप से वाता अनुकूलित वा फैमिली के साथ बैठने की उत्तम व्यवस्था है हमारे यहां सभी प्रकार के स्वादिष्ट मल्टी चाइनीस शुद्ध शाकाहारी व्यंजन अनुभवी शेफ के द्वारा परोसे जाते हैं सभी प्रकार के बर्थडे किटी पार्टी मीटिंग आदि की उचित व्यवस्था है इस मौके पर शहर वासियों से यही कहना चाहूंगा वह एक बार जरूर आए और अपनी सेवा का अवसर जरूर प्रदान करें कार्यक्रम के दौरान मुख्य रूप से प्रमोद अग्रवाल गीता अग्रवाल राजेंद्र सिंह बिष्ट अनमोल अग्रवाल शुभम अग्रवाल परिवार सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

नालसा द्वारा पैनल अधिवक्ताओं को दिया गया ऑनलाइन प्रशिक्षण

संवाददाता, प्रतापगढ़ । राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा संचालित टोल फ्री नम्बर 15100 के उपयोग और जिला विधिक सेवा प्राधिकरणों के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु माननीय जनपद न्यायाधीश अब्दुल शाहिद के आदेशानुसार एवं नीरज कुमार बरनवाल अपर जिला जजध्सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयोजकत्व में जनपद न्यायालय प्रतापगढ़ में स्थित सभागार में नालसा के लिए चयनित पैनल एडवोकेट विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, मुकुंद राव, प्रेम प्रकाश सहित जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रतापगढ़ के कार्यालय स्टाफको नालसा द्वारा ऑन लाइन दो घंटे का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली के टोल फ्री नंबर 15100 पर आने वाली काल एवं उसके निराकरण में आने वाली समस्याओं के संबंध में नालसा की टेक्निकल टीम द्वारा प्रदेश के समस्त जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के स्टाफऔर पैनल एडवोकेट को दो घंटे का प्रशिक्षण दिया गया। लॉगिन करने , काल करने , आने वाली काल को रिसीव करने के बारे में विस्तार से प्रशिक्षित किया गया। ज्ञात हो कि कोई भी व्यक्ति नि:शुल्क विधिक सहायता हेतु नालसा की उक्त टोल फ्री नम्बर पर विधिक सहायता हेतु अनुरोध कर सकता है, जिस पर संबंधित जिला विधिक सेवा प्राधिकरण तथा वहां के लिए चयनित पैनल एडवोकेट को काल अग्रेषित की जाती है । इस अवसर पर पैनल एडवोकेट विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, मुकुंद राव, प्रेम प्रकाश, प्राधिकरण कार्यालय स्टाफ शैलेश ओझा , अजय कुमार शर्मा, कंप्यूटर सेक्शन में टेक्निकल असिस्टेंट जितेन्द्र कुमार मिश्र उपस्थित रहे।

गुरु गोविंद सिंह स्टेडियम में खेल महोत्सव का आयोजन

संवाददाता, कानपुर। काकादेव स्थित गुरु गोविंद सिंह क्रिकेट अकादमी में थे सेलिंग गाइड्स के छात्रों के लिए एक खेल महोत्सव का आयोजन किया गया या आयोजन संस्थापक निदेशक थे सेलिंग गाइड परवेज रुस्तम जी वह राजेश गुप्ता व प्रधानाचार्य विनीता मल्होत्रा की उपस्थिति में आयोजित हुआ आयोजन दीपक प्रकाशन और मैस्कॉट काँकाटू को रिलीज करके शुरू हुआ संगीत समूह ने दर्शकों के पैरों को नृत्यित किया विभिन्न पॉइंट डील्स जैसे की मिनियन डील्स पेंगुइन डील्स अंब्रेला डील्स और जुंबा का प्रदर्शन किया गया माता-पिता ने अपने बच्चों को कछुआ दौड़ टाइप दौड़ पजल दौड़ रिले दौड़ आदि में भाग लेते हुए देखा विजेताओं को पदक से सम्मानित किया गया माता-पिता सॉन्ग बच्चों की दौड़ को आकर्षण का मुख्य वरीयता माना गया या महोत्सव राष्ट्रीय गान के साथ संपन्न हुआ संस्थापक निदेशक प्रवेश रुस्तम जी प्रधानाचार्य श्रीमती सोनी भार्गव ने विजेताओं को शिक्षकों को उनकी मेहनत और सहयोग भावना के लिए बधाई दी

सरकारी सिस्टम करता रहा रेफर, घायल ने तोड दिया दम

संवाददाता, मथुरा। सरकारी सिस्टम रेफर करता रहा और सड़क हादसे में घायल व्यक्ति ने एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल पहुंचाने की कवायद के दौरान दम तोड़ दिया। तहसील स्तर पर खुले सीएससी से जिला चिकित्सालय और उसके बाद मंडल स्तर के मेडिकल कॉलेज तक सिर्फरेफर का खेल चलता रहा और घायल इस दुनिया से रेफर हो गया। छाता के बरका गांव निवासी चेतराम पुत्र हरिया निवासी बरका थाना कोसीकलां रनवारी गांव में शादी समारोह में शामिल होने के लिए बाइक से जा रहे थे। थाना छाता क्षेत्र अंतर्गत नेशनल हाईवे 19 सर्विस रोड खाद बीज गोदाम के पास अज्ञात स्कूटी सवार ने जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही बाइक अनियंत्रित हो गई और बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों ने घायल अवस्था में उन्हें नजदीकी सीएससी छाता पहुंचाया, यहां से चिकित्सकों ने घायल को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। जिला अस्पताल से एसएन मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया गया। गंभीर रूप से घायल चेतराम पुत्र हरिया निवासी बरका थाना कोसीकलां ने एसएन मेडिकल कालेज पहुंचने से पहले ही दम तोड दिया। परिजनों ने बताया कि वह अपने गांव से छाता के पास रनवारी गांव में शादी समारोह में शामिल होने के लिए बाइक से जा रहे थे। पुलिस के द्वारा शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम कराया गया है। परिजनों के द्वारा एक्टिवा स्कूटी चलक के खिलाफ थाना छाता कोतवाली में तहरीर दे दी है।

सदर विधायक प्रकाश द्विवेदी वास्तव में विकास का दूसरा नाम है : समाजसेवी सुमित शुक्ला

संवाददाता, बांदा। जिले के सहेवा गांव 2017 से पहले बांदा जिले का अतिपिछड़ा गांव था यहां की सड़कों पर गड्ढे और कीचड़ ही चारों तरफ दिखाई देता था किन्तु 2017 के चुनाव में बांदा विधानसभा से पहली बार प्रकाश द्विवेदी के जीतने के बाद मानों सहेवा गांव के भाग्य ही खुल गये। समाजसेवी सुमित शुक्ला ने बताया कि उनके विधायक बनने से पूर्व हमारे गांव की प्रमुख सड़कें कच्ची मिट्टी की तथा कीचड़ व धूल से भरी हुई थी जगह जगह गड्ढों का सामना करना पड़ता था जब वो विधायक बनकर गांव में पहली बार आये थें तो उन्होंने संकल्प लिया था कि सहेवा गांव की सड़कों की तस्वीर बदल देंगे वहीं हुआ उनके द्वारा सहेवा से घुरौंडा होते हुए जखनी मार्ग, सहेवा से जखनी मार्ग, जखनी से जमरेही मार्ग, बांदा बिसंडा मुख्य मार्ग से गांव को जोड़ने वाली दो प्रमुख मार्गों को तथा सहेवा से जमरेही मार्ग का कार्य भी प्रगति पर है इनके अलावा गांव की छोटी छोटी सड़कों का जाल भी इनके अथक परिश्रम से बिछाया गया उनके इन कार्यों के लिए हम सभी ग्रामवासी सदा आभारी रहेंगे। इसके साथ ही समाजसेवी सुमित शुक्ला ने बताया कि बहुत जल्द हम सभी ग्रामवासी मिलकर सहेवा गांव में विधायक सम्मान समारोह का आयोजन भी करेंगे।

बसहा गांव में पीली ईट से हो रहा खड़ंजे का निर्माण

संवाददाता, प्रतापगढ़ । विकासखंड शिवगढ़ क्षेत्र के बसहा गांव में प्रधान और सेक्रेटरी द्वारा मनरेगा के तहत मुन्नीलाल गौड़ के घर से सई नदी तक खड़ंजे का निर्माण कराया जा रहा है। जिसमें गांव के शेर सिंह, अखिलेश सिंह, दिनेश सिंह, धीरज सिंह, मदन सिंह, सूरज सिंह, ऋषि सरोज, रामचंद्र हरिजन, मोनू सरोज, सहित ग्रामीणों का आरोप है कि खड़ंजे में तीन नंबर पीली ईट का प्रयोग किया जा रहा है। तीन नंबर पीली ईट से खड़जे का निर्माण होता देखकर ग्रामीण दंग रह गए। ग्रामीणों का आरोप है कि खड़जे पर ट्रैक्टर जाते ही पीली ईट टूट जायेगी। और तीन नंबर पीली ईट से खड़ंजा का निर्माण कराकर प्रधान और सेक्रेटरी खुलेआम मानक की धज्जियां उड़ा रहे हैं। और सरकार की मंसा पर पानी फेर रहे हैं। विभागीय अधिकारी जानकर भी अंजान बने हुए हैं। बसहा गांव में तीन नंबर पीली ईट से विद्यालय की बाउंड्री वॉल और खडंजा निर्माण का मामला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। गांव के ग्रामीणो ने इस ओर जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए तत्काल मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई किए जाने की मांग की है। इस संबंध में एडीओ पंचायत शिवगढ़ राजेश सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि पीली ईट से खड़ंजे का निर्माण करने का कोई प्राविधान नहीं है अगर बसहा में पीली ईट से खड़जा निर्माण कराया जा रहा है तो मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफसख्त कार्रवाई की जाएगी।

बॉबी देओल ने ज्वेलरी शोरूम का किया उदघाटन

संवाददाता, कानपुर। बिरहाना रोड स्तिथ ज्वेलरी के एक शोरूम का उद्घाटन करने फिल्म जगत के स्टार बॉबी देओल कानपुर आए। एक निजी ज्वेलरी शोरूम में उदघाटन किया और मंच से अपने चाहने वाले प्रशंसको और लोगों का अभिवादन किया। बिरहाना रोड स्थित एक निजी ज्वेलरी शोरूम में बॉलीवुड सितारों में अपनी अलग पहचान बनाने वाले बॉबी देओल ने कानपुर में आकर शोरूम में का उद्घाटन किया। इस मौके पर उनके सैकड़ों प्रशंसक वहां पंहुंचे जिसके बाद प्रशासन ने बिरहाना रोड का यातायात कुछ समय के लिए रोक दिया ,,, साइन सितारे बॉबी देवल मीडिया से दूरी बनाते हुए मंच से ही अभिवादन करते हुए कार में बैठकर निकल गए।

सड़क सुरक्षा बैठक में अध्यक्ष के निर्देश साबित हुए खोखले

संवाददाता बांदा। शहर कोतवाली अंतर्गत मवई बुजुर्ग गांव के शंकर जी मंदिर के पास बीती रात एक अज्ञात ट्रक वाहन ने एक भैंस को मारी जोरदार टक्कर , कुछ घंटों बाद भैस की मौत हो गई,भैंस मवई बुजुर्ग गांव के बच्चू प्रजापति की बताई जा रही है। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि बीते 2 दिन पहले ही यही पर आर्यावर्त बैंक व टेहुहा तालाब के पास डंफर ट्रक ने दो लोगों की जान ले चुके थे, इसके बाद बीते गुरुवार की रात को एक तेज रफ्तार ट्रक ने भैंस की जान ले ली जिसकी कीमत करीब 50 हजार लगभग बताई जा रही है।ग्रामीणों की मांग है कि अगर स्पीड ब्रेकर बनवा दिया जाये तो इस तरह के हादसे ना होंगे। विगत दिनों में तेज रफ्तार ट्रको ने,ब्रेकर विहीन सड़क में लिखीं थी मौत की इबारतें। ग्राम मवई स्थित आर्यावर्त बैंक के पास,अनियंत्रित ट्रक ने दो भाइयों को मारी जोरदार टक्कर जिसमे रामकरण पुत्र सुरजपाल 35 वर्ष निवासी पपरेंदा एक की मौत एक गंभीर रूप से घायल हुआ था। उसी दिन शायंकाल लगभग 5 बजे पचनेही ग्राम से आ रहे बाइक सवार दो लोगों को बांदा की तरफ आ रहा तेज रफ्तार डंफर ट्रक ने पीछे से टक्कर मार कर दिया मौत,लिखी एक और मौत की इबारत। ग्राम पचनेही देहात कोतवाली थाना के निवासी सुशील पुत्र कंचन 32 वर्ष,नीरज पुत्र लवलेश 34 वर्ष तेज रफ्तार ओवरलोड ट्रक की चपेट में आकर मोटरसाइकिल सवार एक युवक सुशील पुत्र कंचन जो ट्रक टक्कर से नीचे घुस गया लगभग बहुत देर तक नीचे ही फंसने से एक की मौत एक गंभीर रूप से घायल हो गया था।

मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर अधिवक्ताओं में आक्रोश

- बार के पूर्व कार्यवाहक महासचिव राजेश खरे ने बार को ज्ञापन सौंपकर मतदाता सूची सुधारने की उठाई मांग
- कहा, जिन अधिवक्ताओं ने आपत्ति दाखिल की है और सदस्यता शुल्क जमा किया है उन्हें भी सूची में जोड़ा जाए

संवाददाता, प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से 20 फरवरी को जारी की गई अंतिम प्रकाशित मतदाता सूची में बड़ी खामियां मिली हैं। इसे लेकर अधिवक्ताओं में भारी आक्रोश व्याप्त है।मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर शुक्रवार को बार के पूर्व कार्यवाहक महासचिव अधिवक्ता राजेश खरे की अगुवाई में तमाम अधिवक्ताओं ने बार एसोसिएशन को ज्ञापन सौंपकर मतदाता सूची को सुधारने की मांग की है। साथ ही अधिवक्ताओं ने मांग की है कि मतदाता सूची में जिन अधिवक्ताओं को नहीं शामिल किया गया है उन्हें भी शामिल किए जाने की मांग की गई है। अधिवक्ता राजेश खरे ने बार के अध्यक्ष और महासचिव की अनुपस्थिति में संयुक्त सचिव प्रेस अमरेंदु सिंह को ज्ञापन देते हुए मांग की है कि जिन अधिवक्ताओं ने 31 जनवरी तक अपना एफिडेविट के माध्यम से सदस्यता शुल्क जमा किया है उनको मतदाता सूची में जोड़ा जाए तथा जो अधिवक्ता राज्य विधि अधिकारी मई 2023 तक थे तथा अन्य अधिवक्ताओं ने जिन्होंने 26 फरवरी तक बार एसोसिएशन कार्यालय में आपत्ति दाखिल कर अपना सदस्यता शुल्क जमा किया है उनका भी नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाए। जिससे अधिक से अधिक अधिवक्ता मतदान कर सकें और चुनाव पारदर्शी तथा निष्पक्ष हो सके। उन्होंने कहा कि महिलाओं की जो सूची जारी की गई है उसमें महिला मतदाता की फोटो की जगह पुरुष अधिवक्ता की फोटो लगा दी गई है। ऐसे एक दो अधिवक्ताओं की बल्कि सैकड़ों अधिवक्ताओं के नाम और फोटो गलत लगाई गई है। मांग की गई है कि सूची में जो गड़बड़ी है इसे अविलंब सुधारा जाए। ज्ञापन देने वालों में अधिवक्ता राजेश खरे मनीष द्विवेदी बृजेश सिंह सेंगर सुधीर केसरवानी रवि नाथ तिवारी राजेंद्र कुमार राठौर डी एस मणि त्रिपाठी सुरेश कुमार मौर्य सुनील कुमार सहगल राजेश यादव डी के त्रिपाठी आदर्श चौधरी शिव बाबू मौर्य महावीर वर्मा बृजेश कुमार श्रीवास्तव राकेश कुमार सिंह राम दुलारे संतोष कुमार राव अर्जुन कुमार रोमिल गुप्ता धर्मेंद्र कुमार यादव अशोक कुमार सिंह आदि रहे।

24 अखिल भारतीय लघु नाटक प्रतियोगिता की विजेता बनी प्रयागराज

जय प्रकाश सर्वश्रेष्ठ हास्य अभिनेता

चर्चित राजनीति/संवाददाता

प्रयागराज। 24 वें अंग नाट्य यज्ञ 2024 में भारत के कई प्रदेशों से 17 टीमों नेभाग लिया जिसमें लघु नाट्य,नुक्कड़ नाटक,रंगारंग, कैंप फायर,लोक नृत्य,वेस्टर्न नृत्य आदि प्रतियोगिताएं हुई।जिसमें प्रयागराज के अम्बर नाट्य संस्थान प्रयागराज को सर्वश्रेष्ठ हास्य नाटक ष्दामादष् को प्रथम पुरस्कार, साथ ही नाटक दामाद में सर्वश्रेष्ठ हास्य अभिनेता जयप्रकाश,सर्वश्रेष्ठ चरित्र अभिनेत्री आकांक्षा देवी को द्वितीय,नाटक के सेट को तृतीय पुरस्कार, इसके अतिरिक्त कैंप फायर में तृतीय, नृत्य वेस्टर्न में स्वतंत्र दुबे को प्रथम पुरस्कार मिला। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कलाकार थे,भिखारी लाल (सुधीर सिन्हा), दुर्गेश नंदिनी (रेनु), लाजवंती (आकांशा देवी), दामाद- गोवर्धन (जयप्रकाश), सुब्रमण्यम (लवकुश भारती), टिकारी लाल (दयाशंकर यादव), रूपा (अंजलि यादव), (वीरेन्द्र कुमार कश्यप),संगीत राजमणि मौर्य एवं प्रकाश सज्जा अंकित कुमार ने अपने अभिनय से दर्शकों को बंधे रखा। नाटक का निर्देशन रमेश चंद्रधुरिया का था।

दूध की पिकप ने बारातियों की कार में मारी टक्कर, चार बाराती हुए घायल

संवाददाता, भरथना,इटावा। भरथना कोतवाली क्षेत्र अन्तर्गत ऊसराहार भरथना मार्ग स्थित कल्पना नगर के समीप दूध से भरी तेज रफ्तार पिकप गाड़ी ने बारातियों की लग्जरी कार में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी,जिसमें कार में सवार पांच बारातियों में दो गम्भीर दो चोटिल सहित चार लोग बुरी तरह घायल हो गए। हालांकि दुर्घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दुर्घटना को अंजाम देने वाली दूध से भरी पिकप को कब्जे में लेकर सभी घायलों को इलाज हेतु भरथना चिकित्सालय भेजा जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक इलाज के बाद दो लोगो को गम्भीर हालत में जिला चिकित्सालय रिफर कर दिया। बारातियों की कार में सवार धर्मेंद्र कुमार 31 बर्ष पुत्र प्रधान सिंह ग्राम उजीतीपुर थाना फफूंद जनपद औरैया ने बताया की बीती रात्रि करीब साढ़े 10 बजे वह अपने ममेरे भाई की बारात में अपने पिता,भाई,जीजा और मामा के साथ एक कार से विवाह स्थल ऊसराहार मार्ग स्थित मोहल्ला कल्पना नगर के उदय उत्सव मैरिज

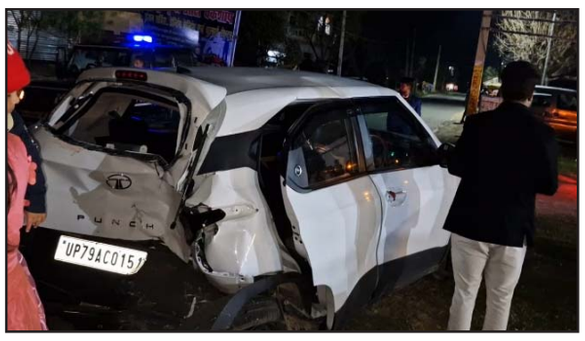

होम पहुंचा और जैसे ही उन्होंने अपनी कार को रोड के नीचे खड़ी करके कार में सवार सभी लोग कार से निकल ही रहे थे कि इसी बीच ऊसराहार की तरफ से तेज रफ्तार दौड़ी आई,दूध के कंटेनरो से भरी एक पिकप गाड़ी ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें उसके पिता प्रधान सिंह 53 बर्ष पुत्र जगन्नाथ सिंह व छोटा भाई धीरेंद्र प्रताप सिंह 26 बर्ष निवासी ग्राम उजीतीपुर थाना फफूंद जनपद औरैया,जीजा उदय प्रताप सिंह 46 बर्ष पुत्र सिपाई राम ग्राम उम्मेदपुर थाना साहर औरैया,मामा अनिल कुमार 47 बर्ष पुत्र बाबूराम ग्राम नगला छिद्दी थाना बकेवर बुरी तरह घायल हो गए। जिन्हें अन्य बारातियों व पुलिस के सहयोग से इलाज हेतु भरथना चिकित्सालय पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक इलाज कर गम्भीर घायल पिता प्रधान सिंह और जीजा उदय प्रताप को जिला चिकित्सालय रिफर कर दिया है। घटना के सम्बन्ध में उसके द्वारा दुर्घटना को अंजाम देने वाली पिकप और उसके चालक के विरुद्ध कार्यवाही हेतु भरथना कोतवाली में प्रार्थना पत्र सौंप कर कारवाई की गुहार लगाई है।

लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति की अहम बैठक में पार्टी को भारी मतों से जिताने की रणनीति तय की गई

चर्चित राजनीति/संवाददाता

बांदा। कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्र में भाजपा ने लोकसभा चुनाव के लिए कमर कस ली है। इसकी शुरुआत करते हुए भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी धाम जिला भाजपा कार्यालय के सभागार में बांदा-चित्रकूट क्षेत्र की लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति की अहम बैठक में पार्टी को भारी मतों से जिताने की रणनीति तय की गई। बांदा-चित्रकूट लोकसभा क्षेत्र की चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक में वरिष्ठ कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारियों से संवाद करते हुए कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने सांकृतिक और आर्थिक विकास के समानांतर कीर्तिमान स्थापित किए हैं। ष्एक बार फिर से मोदी सरकारष, ष्अबकी बार 400 पारष् और ष्दो बातें मत जाना भूल राम मंदिर कमल का फूलष्नारे के शुरू बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यह सीट पार्टी 5 लाख वोटों से जीते इस रणनीति पर कार्य योजना बनाई

गई है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अति आत्मविश्वास में न रहने की सलाह देते हुए कहा कि विरोधी दलों की जमानत नहीं बचनी चाहिए। पार्टी ने शक्तिकेंद संयोजकों तथा बूथ अध्यक्षों को लक्ष्य देगी। जिसे हर हाल में पूरा करना है। उन्होंने गांव चलो अभियान, महिला सशक्तीकरण अभियान, लाभार्थी संपर्क अभियान तथा विकसित भारत संकल्प यात्रा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए बूथ प्रबंधन, कार्यालयों के संचालन, काल सेंटर आदि चुनाव संबंधी विषयों को प्रमुखता से समझाया। उहोंने रामलला के दर्शन का न्योता ठुकराकर जो लोग रामलला के चौखट नहीं गए वो चुनाव के समय रामभक्तों की चौखट पर भी न आएं। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष संजय सिंह ने की , सभी का आभार चित्रकूट जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी ने व्यक्त किया। संचालन जिला महामंत्री अखिलेश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया। इस अवसर पर जिला प्रभारी रामकिशोर साहू, जलशक्ति राज्य मंत्री रामकेश निषाद, सांसद आरके सिंह पटेल,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष इंद्रपाल सिंह पटेल, नरैनी विधायक ओम मणि वर्मा, किसान मोर्चा क्षेत्रीय अध्यक्ष बालमुकुंद शुक्ला, सन्तोष शुक्ला, शिवशंकर सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील पटेल, सहित तमाम पदाधिकारी उपस्थित रहे।

चकरोड़ निर्माण में दबंग कर रहे हैं मनमानी

प्रशासन का चिन्हीकरण हवा में हुआ फुर्र

संवाददाता, भरथना,इटावा। भरथना तहसील क्षेत्र के ग्राम मोढ़ी स्थित ग्राम मोढ़ा देव सम्पर्क मार्ग से निकलने वाले विवादित चकरोड़ के निर्माण हेतु बीते दिन उपजिलाधिकारी सहित तहसील क्षेत्र के सभी अधिकारियों ने राजस्व टीम और भारी पुलिस वल के साथ पहुंचकर उक्त चकरोड़ का नाप जोख के बाद चकरोड़ निर्माण हेतु चिन्हीकरण किया और मौके पर मौजूद रहकर अधिकारियों ने करीब 10 फिट चौड़ा और करीब 600 मीटर लम्बे चकरोड़ में करीब 160

मीटर तक चकरोड़ डलवा दिया। आपको बतादें विगत बर्ष 1988 से 1990 के मध्य हुई चकबंदी के दौरान उक्त चकरोड़ स्वीकृत हुआ था। लेकिन चकरोड़ का निर्माण नही होने के कारण दोनो तरफके कुछ किसानों ने चकरोड़ की भूमि अपने खेतों में सामिल कर कब्जा कर रखा था। जिसके कारण आगे वाले किसानों को अपने खेतों पर पहुंचना मुस्कील हो रहा था। कई किसानों की मांग पर प्रशासन ने बड़ी कार्यवाही करते हुए उक्त चकरोड़ का चिन्हीकरण कर निर्माण शुरू कराया था। लेकिन अधिकारियों के मौके से जाने के बाद कुछ दबंग किसानों ने मनमानी शुरू करते हुए कमजोर किसानों की तरफ करीब एक मीटर चकरोड़ दववाकर चकमार्ग टेड़ा कर दिया,जिसको लेकर पीड़ित किसानों में आक्रोश व्याप्त है। पीड़ित किसान धर्मनरायन अवधेश,सर्वेश शाक्य व रानी देवी सहित कई ग्रामीणों ने बताया कि उनके खेत से करीब 10 फिट चौड़ा चकरोड़ प्रशांत राज शुक्ला व जयदेवी दीक्षित के खेतों तक करीब 600 मीटर लम्बा निर्माण होना था। जिसके लिए भरथना के उपजिलाधिकारी कुमार सत्यम जीत,नायव तहसीलदार मनीष दुवेदी, कानूनगो जितेंद्र यादव, चकबंदी लेखपाल राजीव, क्षेत्रीय लेखपाल आरिफ खान,अर्जुन सिंह चौहान, राहुल चौबे,गणेश दत्त आदि राजस्व टीम ने जैसे ही चिन्हीकरण कर करीब 160 मीटर चकरोड़ डलवा दिया। और मौजूदा प्रधान की देख रेख में आगे तक चकरोड़ निर्माण के आदेश कर अधिकारीगण जैसे ही मौके से हटे इसी बीच दबंग किसानों ने प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा किए गए चिन्हीकरण की हवा निकाल दी और मनमानी करते हुए चकरोड़ दूसरी तरफदबाते हुए चकरोड़ टेड़ा कर दिया। जिसको लेकर पीड़ित किसानों में दबंग किसानों के प्रति आक्रोश व्याप्त है। उक्त चकरोड़ नाप जोख और चिन्हीकरण के दौरान बड़ी संख्या में किसान और ग्रामीण मौजूद रहे।

एडीएम ने इण्टर स्टेट सरसों अनुसंधान केन्द्र सेवर भरतपुर के लिए वाहनों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

संवाददाता, महोबा। प्रदेश व भारत सरकार किसानों के प्रति बेहद संवेदन शील है और उनकी उपज व आय बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। शासन के आदेशानुसार जिलाधिकारी मृदुल चौधरी एवम मुख्य विकास अधिकारी चित्रसेन सिंह के निर्देश पर जनपद के प्रगतिसील किसानों को उन्नति कृषि के लिए समय समय पर प्रदेश एवम प्रदेश से बाहर कृषि विभाग द्वारा भ्रमण कराया जाता है।इसी क्रम में सब मिशन आन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन आत्मा योजना अंतर्गत एक्सपोजर विजिट इण्टर स्टेट सरसों अनुसंधान केन्द्र सेवर भरतपुर राजस्थान के लिए अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व रामप्रकाश व कृषि उप निदेशक अभय कुमार यादव द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर से वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।एडीएम

ने बताया गया कि कृषि विभाग की आत्मा योजना अंतर्गत किसानों को सरसों अनुसंधान केन्द्र भरतपुर भ्रमण के लिए भेजा जा रहा है इससे किसानों को सरसों की उपज बढ़ाने एवम खेती की जानकारी मिलेगी।वहीं कृषि उप निदेशक अभय कुमार यादव द्वारा बताया गया कि आत्मा योजना अंतर्गत जनपद के चारों ब्लाकों चरखारी जैतपुर पनवाड़ी एवम कबरई से लगभग 35 प्रगतिशील किसानों को सरसों अनुसंधान केन्द्र सेवर भरतपुर राजस्थान भेजा जा रहा है। इस मौके पर कृषि विभाग के समस्त अधिकारी एवम कर्मचारी उपस्थित रहे।

एसपी ने पुलिस लाइन का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

संवाददाता, महोबा। पुलिस अधीक्षक महोबा अपर्णा गुप्ता द्वारा पुलिस लाइन महोबा में साप्ताहिक शुक्रवार परेड की सलामी ली गई व टोलीवार परेड का निरीक्षण किया गया। शारीरिक एवं मानसिक रुप से फिट रहने हेतु दौड़ध्परेड ड्रिल कराई गई। पुलिस कर्मियों के टर्नआउट का अवलोकन कर बेहतर टर्नआउट मेंटेन करने के निर्देश दिए गए, पुलिस अधीक्षक द्वारा आगामी गणतंत्र दिवस के दृष्टिगत साप्ताहिक शुक्रवार की परेड के दौरान पुलिस लाइन महोबा में मौजूद सभी पुलिसकर्मियों से अभ्यास कराते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।इसी क्रम में पुलिस लाइन परिसर का भ्रमण कर कार्यालय भोजनालय, बैरक व शौचालय का साफ सफाई के दृष्टिगत किया निरीक्षण। स्वयं भोजन ग्रहण कर भोजन की गुणवत्ता

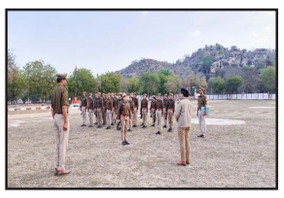

को परखा गया, सभी कर्मचारियों को मिलने वाले भोजन में गुणवत्ता के सम्बन्ध में प्रतिसार निरीक्षक को आवश्यक निर्देश दिए गए साथ ही निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण कर निर्माणकार्य में पूर्ण गुणवत्ता बनाए रखने के निर्देश दिए।पीआरवी चालकों को प्राप्त इवेंट में अति शीघ्र पहुंचते हुए प्राथमिक उपचार एवं क्राइम प्रोटेक्शन किट का प्रयोग करते हुए घटनास्थल को सुरक्षित करते हुए सही फोटोग्राफी करने एवं आग लगने पर फायर सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग किए जाने एवम रात्री 10.00 बजे से प्रात: 06.00 बजे के बीच पीड़ित एवम् असहाय महिला की मदद नियमानुसार करने तथा आवश्यक पुलिस सेवाओं को प्रदान करने हेतु ट्रोल फ्री नंबरों को दिए जाने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किया गया तथा उनकी व्यक्तिगत व सामूहिक समस्या पूछी गई।पुलिस अधीक्षक द्वारा आदेश कक्ष में रजिस्टर पेशी के दौरान विभिन्न रजिस्टरों का अवलोकन कर सम्बन्धित को आवश्यक निर्देश दिए गए। साप्ताहिक अर्दली रूम कर सम्बन्धित कर्मी को उच्च कोटि का अनुशासन बनाये रखने तथा निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन किए जाने के दिए निर्देश।इस दौरान प्रतिसार निरीक्षक शिवकुमार सहित पुलिस लाइन एवं पुलिस कार्यालय के सम्बन्धित अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने विद्यालयों में किया औचक निरीक्षण

शिक्षा की गुणवत्ता को चेक करते हुए शिक्षण कार्य में सुधार करने के निर्देश दिए

चर्चित राजनीति/संवाददाता

बांदा। जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल ने आज प्राथमिक विद्यालय जमुनीपुरवा विकासखंड बड़ोखर खुर्द एवं प्राथमिक विद्यालय डिगवाही का निरीक्षण कियास उन्होंने सर्वप्रथम, प्राथमिक विद्यालय जमुनीपुरवा का निरीक्षण किया स निरीक्षण के दौरान विद्यालय में दो शिक्षक उपस्थित पाए गए ,एक शिक्षक बोर्ड परीक्षा की ड्यूटी में मिले तथा विद्यालय में 83 बच्चे पंजीकृत पाए गए सउन्होंने बच्चों से शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में हिंदी व गणित के प्रश्नों को पूछ कर शिक्षा की गुणवत्ता को चेक करते हुए शिक्षण कार्य में सुधार करने के निर्देश दिए स निरीक्षण के दौरान विद्यालय के एक शौचालय में गंदगी पाए जाने पर तथा पेयजल की पानी की टोटी को तत्काल ठीक कराए जाने एवं सफाई कराए जाने के निर्देश दिएस , निरीक्षण के दौरान 57 बच्चे उपस्थित पाए गए उन्होंने अधिकार अध्यापकों को निर्देश दिए

की बच्चों की उपस्थित अभिभावकों की मीटिंग करके उपस्थित बच्चों की सुनिश्चित की जाए स उन्होंने मिड डे मील मीनू के अनुसार गुणवत्ता रूप दिए जाने तथा विद्यालय को निपुण मिशन के अंतर्गत बनाए जाने के निर्देश दिए इसके उपरांत जिलाधिकारी ने प्राथमिक विद्यालय तथा आंगनबाड़ी केंद्र डिगवाही का निरीक्षण कियास, निरीक्षण के दौरान विद्यालय में 03अध्यापक उपस्थित पाए गएस उन्होंने कक्षा 5 के बच्चों से शिक्षा के गुणवत्ता को चेक करने के लिए पुस्तकों को पढ़पकर तथा गणित के प्रश्न पूछ कर जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देशित किया कि कमजोर बच्चों को चिन्हित कर आगे बिठाना सुनिश्चित करें तथा कमजोर बच्चों के रिवीजन क्लास प्रत्येक सप्ताह में दो दिन अवश्य कराया जाएस, उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्र में निरीक्षण करते हुए कक्षा 2 के बच्चों को बैठने के लिए बेंच की व्यवस्था कराए जाने के निर्देश दिएस, उन्होंने मिड डे मील में बच्चों को मीनू के अनुसार भोजन एवं फलों का वितरण भी कराया जाने के निर्देश दिए निरीक्षण के दौरान विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं ग्राम प्रधान सहित जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी जिला पंचायत राज अधिकारी एवं ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

लाभार्थी संपर्क अभियान की खरेला में आयोजित कार्यशाला में लोकसभा चुनाव की रणनीति पर हुई चर्चा

चर्चित राजनीति/संवाददाता

महोबा। भारतीय जनता पार्टी के लाभार्थी संपर्क अभियान की कार्यशाला खरेला में आयोजित की गई स जिसमें भाजपा पदाधिकारी व सदस्यों ने आगामी लोकसभा चुनाव की रणनीति पर चर्चा की। कार्यशाला के दौरान मुख्य अतिथि भाजपा जिला महामंत्री अंकुर शिवहरे उपस्थित रहे और कार्यकर्ताओं पदाधिकारी को संबोधित कर आवश्यक जानकारी दी। नगर खरेला में स्थित शिवमंगलम पैलेस में भारतीय जनता पार्टी द्वारा लाभार्थी संपर्क अभियान की कार्यशाला को अंकुर शिवहरे ने संबोधित करते हुए कहा कि अभियान का कार्यक्रम आगामी दिनों में आयोजित किया जाना है इस कार्यक्रम के द्वारा भाजपा की केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा आमजन मानस तक जो लाभकारी योजनाएं पहुंची हैं उनसे संपर्क स्थापित कर भाजपा की रितियां एवं नीतियों को बताएं और लाभार्थियों से लगातार संपर्क में रहे जिससे आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को 5 लाख से ज्यादा वोटो से लोकसभा प्रत्याशी को विजय प्राप्त हो। अभियान के संयोजक मोती द्विवेदी ने कहा कि हम सभी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारी को इस कार्यक्रम में एक-एक लाभार्थी तक पहुंचना है और उसको भाजपा की केंद्र व प्रदेश की सरकारो द्वारा जो भी योजनाओं का लाभ मिला है उसे बताना है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंडल अध्यक्ष रूद्र शुक्ला ने कहा कि संगठन का एक-एक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता संगठन के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है जहां दूसरे दल आम जनमानस का बिल्कुल ध्यान नहीं रखते वहीं भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी हमेशा आमजन के बीच उपलब्ध रहते हैं। कार्यशाला में जिला मंत्री रोशन सिंह, पिछड़ा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष अजय विश्वकर्मा, अनुज तिवारी, कन्हिया सिंह, प्रवीण तिवारी, आर्यन सचान, संतोष शिवहरे, ईशान सिंह, सहित सभी पदाधिकारी मौजूद रहे।

गरीब रथ से कटकर एल एल बी छात्र की हुई मौत, दौड़ती ट्रेन की चपेट में आया छात्र

संवाददाता, भरथना,इटावा। भरथना कोतवाली क्षेत्र अन्तर्गत दिल्ली हावड़ा रेलवे ट्रैक स्थित बीती गुरुवार की रात्रि पौने 8 बजे दिल्ली से रांची दौड़ी जा रही सुपरफास्ट ट्रेन संख्या 12878 गरीब रथ एक्सप्रेस ट्रेन से भरथना रेलवे स्टेशन के पूर्वी आउटर के बाहर खंबा नम्बर 1135/14 पर जनपद औरैया के थाना अछल्दा अन्तर्गत ग्राम झीघुरिया इटैली निवासी 25 वर्षीय शिवम उर्फ बॉबी पुत्र महेरवान सिंह टकरा गया जिसका शव खंबा नम्बर 1134/6 के निकट पड़ा मिला। मृतक के चाचा शिक्षक महेश चंद यादव ने बताया उसका भतीजा शिवम उर्फ बॉबी एल एल बी का छात्र था, मृतक दो भाई तीन बहनों में सबसे छोटा था। शिवम उर्फ बॉबी की ट्रेन की चपेट में आने से हुई मौत की खबर सुनते ही मां मुन्नी देवी,पिता महेरवान सिंह,बड़े भाई हरिओम सिंह सहित परिजनों में बुरी तरह कोहराम मच गया। घटना की सूचना पर पुलिस ने मृतक के शव को रेलवे ट्रैक से अपने कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम को भेज दिया है।

एसपी ने वर्चुअल गोष्ठी कर सीएम डैशबोर्ड पर लंबित प्रकरणों की समीक्षा कर निस्तारण के दिए निर्देश

संवाददाता, महोबा । पुलिस अधीक्षक अपर्णा द्वारा गूगलमीट के माध्यम से वर्चुअल गोष्ठी कर जनपद में सीएम डैशबोर्ड पर जनपद के लम्बित प्रकरणों यथा हत्या, दहेज हत्या, शीलभंग, पाक्सो एक्ट, एससी, एसटी एक्ट जैसे अपराधों में पंजीकृत अभियोगों की समीक्षा कर सभी सम्बन्धित को लम्बित प्रकरणों से अवगत कराते हुये उनका त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किये जाने तथा आगामी त्यौहारों व लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत जनपद में कानून एवं शांति व्यवस्था को प्रभावी व सुदृढ़ बनाये रखने के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश दिये गये। पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी थाना प्रभारियों को सीएम डैशबोर्ड के प्रकरणों से अवगत कराते हुए उनका त्वरित निस्तारण पूर्ण करने हेतु प्रत्येक दिवस पोर्टल पर अपने लम्बित प्रकरणों से सम्बन्धित डैशबोर्ड की स्थिति को देखते हुए यथाशीघ्र समस्त कार्यवाहियों के किये जाने के सम्बन्ध में सख्त निर्देश दिए गए स इस वर्चुअल गोष्ठी के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक सत्यम सहित जनपदीय पुलिस के समस्त क्षेत्राधिकारी, सभी थानाध्यक्ष मौजूद रहे।

सुरक्षा व सतर्कता के दृष्टिगत न्यायालय परिसर में संदिग्ध व्यक्ति,वाहन व वस्तुओं की गई सघन चेकिंग

संवाददाता, महोबा। पुलिस अधीक्षक महोबा अपर्णा गुप्ता के निर्देशन पर शुक्रवार को एएस चेक टीम बांदा, डॉग स्क्वॉयड एवं एलआईयू महोबा व न्यायालय सुरक्षा की संयुक्त टीम द्वारा सुरक्षा सतर्कता के दृष्टिगत न्यायालय परिसर महोबा में सघन चेकिंग की गई । न्यायालय परिसर के सभी गेटों पर पुलिस बल तैनात कर हर आने-जाने वाले शख्स की जांच कराई गई। संदिग्धों की तलाशी लेते हुए उनसे आने का कारण पूछा गया। न्यायालय परिसर में लॉकअप, पार्किंग,एवं मैन गेट पर आने जाने वाले लोगों से पूछताछ कर उनका वैरीफिकेशन कराया गया। वहीं आने जाने वाले वाहनों को वैरियर लगाकर चौक किया जा रहा था। इसके अलावा स्कैनर से बैगध्वस्तुओं व अन्य सामान की चौकिंग करने के बाद ही व्यक्तियों को अंदर प्रवेश दिया जा रहा है । वहीं न्यायालय के बाहर खड़ी गाड़ियों को भी चेक किया गया, चेकिंग के दौरान किसी भी प्रकार की आपत्तिजनकध्संदिग्ध वस्तु बरामद नही हुई।

सस्ता हुआ पैसेंजर ट्रेनों का किराया अब साधारण किराए में कानपुर इटावा जा सकेगे यात्री

संवाददाता, कंचौसी,औरैया। कोविड के समय शुरू की गई मेमू स्पेशल ट्रेनों का दर्जा अब हट चुका है। रेलवे ने एक्सप्रेस ट्रेनों में जनरल कोच भी बहाल करने के निर्देश दे दिए हैं। यात्री सुविधाओं में भी धीरे-धीरे इजाफा हो रहा है। ऐसे में अब यात्रियों को फिर से पुराने किराए पर सुविधाओं के साथ सफर करने का मौका मिलेगा। रेलवे ने कोरोना काल में ट्रेनों को स्पेशल दर्जा देते हुए 30 से 40 फीसद तक किराया बढ़ा दिया था। जनरल कोच में भी आरक्षण जरूरी होने पर टिकट के दाम में दोगुनी बढ़ोत्तरी हो गई थी। रेलवे ने सामान्य टिकट पर यात्रा की सुविधा बहाल कर दी है। इसके बाद से कंचौसी रेलवे स्टेशन से होकर जाने वाली चार जोड़ी मेमू ट्रेनों से भी स्पेशल का तमगा पूरी तरह से हट गया है। अब एक्सप्रेस ट्रेनों के जनरल कोच में पूर्व का किराया ही लिया जाएगा।

आठ घंटे देरी से कंचौसी रेलवे स्टेशन पहुंची फरक्का एक्सप्रेस

संवाददाता, कंचौसी,औरैया। कोहरे खत्म होने और सर्दी का अन्तिम दौर होने के बावजूद भी एक्सप्रेस ट्रेनें लेट हो रही है। शुक्रवार को फरक्का एक्सप्रेस 8 घंटे देरी से कंचौसी रेलवे स्टेशन पहुंची।वहीं सबसे अधिक परेशानी दूर दराज से ट्रेन पकड़ने आए यात्रियों को हुई। फरक्का एक्सप्रेस सुबह अपने निर्धारित समय सुबह 4 बजे के बजाय 8 घंटे की देरी से रेलवे स्टेशन पहुंची। आपको बताते चलें कि दिल्ली, गजियाबाद, फिरोजाबाद, इटावा और कानपुर सेंट्रल, लखनऊ, उन्नाव, अयोध्या धाम, बनारस, आजमगढ़ , सुल्तानपुर, बनारस, जौनपुर सिटी, लखनऊ , जफराबाद रेलवे मार्ग पर ट्रेनें लेट होने से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ट्रेनों के लेट होने के चलते यात्री बसों और अन्य प्राइवेट वाहनों का सहारा लें रहे हैं। भटिंडा से मालदा टाउन जाने वाली फरक्का एक्सप्रेस 8 घंटे की देरी से कंचौसी रेलवे स्टेशन पहुंची। इसके कारण यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। रेलवे आधिकारी ट्रेनें लेट होने के कारण से बचते नजर आए।अयोध्या धाम, बनारस, लखनऊ, जौनपुर, सुल्तानपुर, जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यात्रियों का कहना है कि आए दिन ट्रेनों के देरी से पहुंचने के कारण परेशानी हो रही है। यात्रियों को ट्रेनों के समय की एडवांस सूचना भी दी जानी चाहिए। वही चण्डीगढ़ से प्रायगराज जाने वाली ऊंचाहार एक्सप्रेस अपने समय से डेढ़ घंटे की देरी से कंचौसी रेलवे स्टेशन पहुंची, यात्री कानपुर, उन्नाव, फतेहपुर, प्रयागराज जाने वाले यात्री परेशान हुए। इस संबध में स्टेशन अधीक्षक शैलेंद्र कुमार ने बताया ट्रेनें लेट चल रही जिसकी जानकारी यात्रियों को माइक से अनाउंस करके समय समय पर दी जा रही है।

नामजद लोगों द्वारा निजी व आबादी की जगह पर किया जा रहा कब्जा

संवाददाता, औरैया। जनपद के थाना दिबियापुर क्षेत्र के ग्राम मुरलीपुर्वा में नामजद लोगों द्वारा गांव के ही एक व्यक्ति के निजी जगह एवं आबादी की जगह पर निर्माण कार्य कर कब्जा किया जा रहा है। जिसको लेकर पीड़ित ने इस आशय की शिकायत तहसील दिवस के अलावा जिला अधिकारी एवं मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर करते हुए अवैध निर्माण कार्य को रोके जानेश तथा दोषियों के खिलाफकार्रवाई किए जाने की गुहार लगाई है। पीड़ित का यह भी कहना है कि जब वह अवैध निर्माण कार्य के लिए विरोध करता है तो विपक्षीगण उसे धमकी देते हुए गाली-गलौज कर मारपीट पर आमादा हो जाते है। थाना दिबियापुर क्षेत्र के मौजा लछियामऊ ग्राम मुरली पुरवा निवासी सुशील सिंह पुत्र स्वर्गीय लाखन सिंह तहसील बिधूना ने तहसील दिवस के अलावा जिला अधिकारी एवं मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर पर शिकायती प्रार्थना पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि उनके ही गांव के नामजद विपक्षीगण पीड़ित की निजी भूमि संख्या 69/292 एवं आबादी की जगह पर निर्माण कार्य करके जबरन कब्जा कर रहे हैं। जब वह इसका विरोध करता है तो वह लोग उसे धमकी देते हुए गाली-गलौज कर मारपीट पर आमादा हो जाते है। कहा कि विपक्षीगण गुंडा किस्म के व्यक्ति हैं जो धमकी के साथ गाली-गलौज एवं मारपीट पर आमादा हो जाते है।

फिल्म फे स्टिवल अवॉर्ड्स में नयनतारा के साथ चलेया गाने पर झूमे शाहरुख खान

बॉलीवुड मेगास्टार शाहरुख खान के साथ फिल्म जवान में काम करने वाली साउथ एक्ट्रेस नयनतारा एक पुरस्कार समारोह में किंग खान के साथ नजर आईं, जहां उन्होंने खूब मस्ती की। हाल ही में आयोजित दादा साहब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल अवॉर्ड्स 2024 में नयनतारा को फिल्म जवान के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड मिला। कार्यक्रम के एक वीडियो में दिखाया गया है कि जब वह पुरस्कार लेने के लिए मंच पर चढ़ीं तो शाहरुख ने उन्हें सहारा दिया। शाहरुख ने नयनतारा के साथ जवान फिल्म के गाने चलेया पर हुक स्टेप भी किया। इसका एक वीडियो वायरल हो रहा है। निर्देशक एटली की फिल्म जवान से हिंदी सिनेमा में डेब्यू करने वालीं नयनतारा ने गोल्डन येलो कलर की साड़ी पहनी थी और अपने बालों का जूड़ा बना रखा था। उन्होंने अपने लुक को चोकर और मैचिंग इयररिंग्स के साथ पूरा किया। फिल्म फे स्टिवल अवॉर्ड्स में शाहरुख को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार भी मिला। मुंबई में हुए अवॉर्ड शो में निर्देशक एटली, उनकी पत्नी प्रिया और संगीतकार अनिरुद्ध रविचंदर समेत जवान की पूरी टीम मौजूद थी।

>>> बॉलीवुड <<<

मॉमी करीना का दिखा बॉसी लुक तो बुआ सोहा कैजुअल में आई नजर, जेह की बर्थडे पार्टी में सेलेज़्स का मेला

बॉलीवुड के नवाब सैफ अली खान और बेबो करीना कपूर के लाडले बेटे जेह अली खान आज 3 साल के हो गए हैं। इस मौके पर इस रॉयल कपल ने रणधीर कपूर के घर में एक बड़ी से पार्टी का आयोजन किया। यहां पर बी-टाउन सेलेब्स अपने-अपने बच्चों के साथ पहुंचे। करीना यहां सैफ के हाथों में हाथ डाले नजर आई और बेहद खुशी से पैपराजी को कर रही थीं। लुक की बात करें तो करीना ने ब्लू जींस के साथ येलो टी-शर्ट वियर की, साथ में हरे रंग के ब्लेजर को पेयर किया था । व्हाइट स्नीकर्स और ब्लैक हैंडबैग के साथ लुक उन्होंने को पूरा किया। वहीं सैफ कुर्ते पाजामे में हैंडसम लगे।

बॉलीवुड के नवाब सैफ अली खान और बेबो करीना कपूर के लाडले बेटे जेह अली खान आज 3 साल के हो गए हैं। इस मौके पर इस रॉयल कपल ने रणधीर कपूर के घर में एक बड़ी से पार्टी का आयोजन किया। यहां पर बी–टाउन सेलेब्स अपने–अपने बच्चों के साथ पहुंचे। करीना यहां सैफ के हाथों में हाथ डाले नजर आई और बेहद खुशी से पैपराजी को ूंअम कर रही थीं। लुक की बात करें तो करीना ने ब्लू जींस के साथ येलो टी–शर्ट वियर की, साथ में हरे रंग के ब्लेजर को पेयर किया था । व्हाइट स्नीकर्स और ब्लैक हैंडबैग के साथ लुक उन्होंने को पूरा किया। वहीं सैफ कुर्ते पाजामे में हैंडसम लगे। बर्थडे बॉय जेह अली खान ने कैजुअल जींस शर्ट कैरी की। लेकिन जिस चीज ने सबसे ज्यादा ध्यान खींचा वो था, जेह बालों में लगा जेल। बड़े भैया तैमूर लगता है स्कूल से सीधा पार्टी में आए थे, वो स्कूल यूनिफॉर्म में स्पॉर्ट हुए। मामा रणबीर कपूर अपनी बेटी राहा और भांजी समारा के साथ पार्टी में पहुंचे। एक्ट्रेस सोनम कपूर ने बेटे वायु के साथ नजर आई, इस दौरान ीपवदपेजं ने गोल्डन कलर की प्रिंटेड ड्रेस पहनी। नेहा धुपिया ने ब्लैकसिवतंस कतमे में नजर आईं। वो भी अपने दोनों बच्चों के साथ पार्टी अटेंड करने पहुंची। बुआ सोहा अली खान और कुणाल खेमू बेटी इनाया के साथ पार्टी में पहुंचे। दोनों कैजुअल लुक में थे।वहीं जेह के नाना–नानी रणधीर और बबीता ने व्हाइट में ट्विनिंग की।

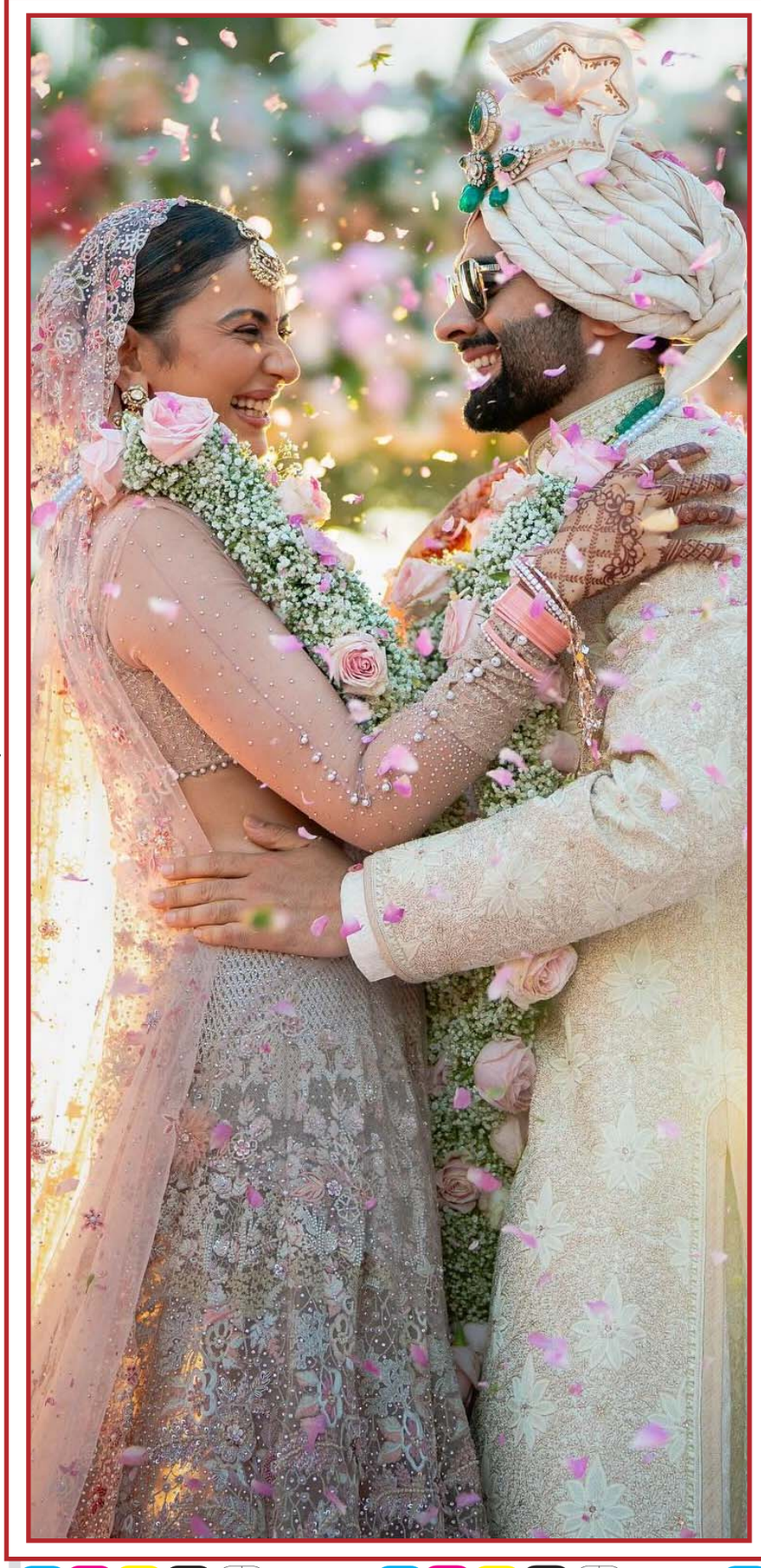

वरुण धवन से लेकर नयनतारा तक, सेलेब्स ने दी रकुल प्रीत सिंह और जैकी भगनानी को बधाई

रकुल प्रीत सिंह और जैकी भगनानी 21 फरवरी को गोवा में शाही शादी के बंधन में बंध गए हैं। इसके बाद कपल ने बिना देरी करते हुए अपनी शादी की तस्वीरें भी सबके साथ सोशल मीडिया पर शेयर की। अब बॉलीवुड के सेलेब्स उन्हें शादी की बधाई दे रहे हैं। बॉलीवुड एक्ट्रेस में से एक रकुल प्रीत सिंह मिसेज भगनानी बन चुकी हैं कपल ने बीते दिन गोवा में परिवार और दोस्तों के बीच शाही शादी की और उसके बाद सोशल मीडिया पर अपनी शादी की तस्वीरें भी शेयर की। अब सामंथा रुथ, मृणाल ठाकुर से लेकर मलाइका अरोड़ा तक कई सेलेब्स और फैंस उन्हें बधाइयां दे रहे हैं। कपल ने अपनी शादी की फोटोज को सोशल मीडिया पर सबके साथ शेयर किया, जिसके बाद बॉलीवुड के सितारे उन्हें बधाई देने में लग गया है। सोनाक्षी सिन्हा ने लिखा, 'आप लोगों को बधाई'। सोनल चौहान ने लिखा, 'आप दोनों को बहुत-बहुत बधाई'। भूमि पेडनेकर ने रकुल प्रीत के पोस्ट पर कमेंट करते हुए लिखा, 'सबसे खूबसूरत 3 दिन'। इनके अलावा दीया मिर्जा ने कमेंट करते हुए लिखा, 'बधाई, हमारा सारा प्यार और आशीर्वाद'. राशि खन्ना ने शादी की बधाई देते हुए कमेंट में लिखा, 'आप लोगों को बधाई!!!'. जेनेलिया देशमुख ने भी दोनों को शादी की बधाई देते हुए लिखा, 'आप लोगों को बधाई', रितेश देशमुख ने भी कमेंट करते हुए लिखा, 'बहुत बहुत बधाई हो आप खूबसूरत लोगों को'. मृणाल ठाकुर ने भी दोनों को बधाई देते हुए लिखा, 'बधाई हो' और भी कई सितारे कमेंट्स में बधाई दे रहे हैं। एक नहीं बल्कि दो रीती-रिवाजों से शादी की है बता दें कि रकुल प्रीत सिंह सीख परिवार से है और जैकी भगनानी सिंधी परिवार से आते है, पहली पंजाबी और दूसरी सिंधी रिवाज से शादी किया। रकुल प्रीत सिंह ने अपनी शादी में डिजाइनर तरुण तहिलियानी का पेस्टल लहंगा पहना था। इस लहंगे में थ्रेड और पर्ल से हैंडवर्क किया गया था। डिजाइनर तरुण तहिलियानी ने भी अपने इंस्टाग्राम पर लहंगे की जानकारी शेयर कर दी है। इस पोस्ट के साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा, 'शाम की शादी के लिए रकुल ने एक कॉन्टेम्परेरी लेकिन वाइब्रेंट परसोना को इमैजिन किया। तरूण तहिलियानी ने एक विजन उनकी लाइफ में शामिल किया'।

>>> बॉलीवुड <<<

माता सीता को लेकर ये क्या बोल गए विक्रांत मेस्सी, अब 12वीं फे ल स्टार को मांगनी पड़ी माफी

कहते हैं ना जिसका नाम होता है वही बदनाम होता है। 12वीं फे ल में पास होने वाले एक्टर विक्रांत मैसी के साथ भी कुछ ऐसा हो रहा है। एक फिल्म से लाखों दिलों में खास जगह बना चुके एक्टर अपने एक पुराने ट्वीट को लेकर विवाद में फंस गए हैं। हालात ऐसे हो गए कि उन्हें सामने आकर खुद माफी मांगनी पड़ी फिल्म 12वीं फे ल, 2023 की सबसे चर्चित रिलीज में से एक रही और इस इंस्पायरिंग स्टोरी वाली फिल्म को दर्शकों ने भी खूब सराहा। सच्ची कहानी पर आधारित 12वीं फे ल उन लाखों छात्रों के संघर्ष पर आधारित है जो यूपीएससी प्रवेश परीक्षा देते हैं। इस फिल्म में विक्रांत का दमदार काम देखकर लोग उनकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं, लेकिन इसी बीच उनका एक पुराना ट्वीट वायरल हो गया। दरअसल ये ट्वीट 2018 का है जब जम्मू-कश्मीर के कठुआ में 8 साल की बच्ची के साथ गैंगरेप कर उसकी हत्या कर दी गई थी। उस पर एक्टर ने गुस्सा जाहिर करते हुए एक कार्टून शेयर किया था। इस कार्टून में हाथ में अखबार थामे देवी सीता कार्टून में भगवान राम के बारे में बताती नजर आईं। इस पोस्ट के कैप्शन में लिखा, मुझे बहुत खुशी है कि मेरा अपहरण रावण ने किया था, आपके भक्तों ने नहीं। इस कार्टून को देख लोग काफी भड़क गए हैं। ऐसे में एक्टर ने अपनी गलती मांगते हुए लिखा-2018 में मेरे एक ट्वीट के संदर्भ में, मैं कुछ शब्द कहना चाहूंगारू हिंदू समुदाय को चोट पहुंचाने, बदनाम करने या अपमान करने का मेरा इरादा कभी नहीं था, लेकिन जैसे ही मैं मजाक में किए गए एक ट्वीट के बारे में सोचता हूं, तो समझ आता है कि यही बात एक अखबार में छपे कार्टून को जोड़े बिना भी कही जा सकती थी और मैं अत्यंत विनम्रता के साथ उन सभी लोगों से माफी मांगना चाहता हूं जिन्हें ठेस पहुंची है।

दोस्तों के साथ भारत की इन खास जगहों का करें दूर

एडवेंचर एक्टिविटीज का लुत्फ उठाएं

अगर आप भी घूमने का प्लान बना रहें तो भारत की सबसे बेस्ट प्लेसेस है। पूर्व से लेकर दक्षिण तक इन जगहों पर टूर कर सकते है। इस आर्टिकल में हम बताएंगे भारत की शानदार जगहें जिन्हें आप अपने घूमने का डेस्टिनेशन बना सकते हैं। तो बिना देर किए इन टॉप जगहों के बारें में बताते है। ऐसे में लोग घूमने का प्लान बनाते है। इस दौरान कई बच्चों के एग्जाम खत्म हो जाते है। वह अपने परिवार या दोस्तों के साथ कहीं न कहीं घूमने जाते है। महीना में न ठंड होती है और न ज्यादा गर्मी होती है। यह मौसम घूमने का सबसे बेस्ट होता है। पर्टनर के साथ घूमने के लिए यह समय काफी अच्छा है।

अगर आप भी घूमने का प्लान बना रहें तो भारत की सबसे बेस्ट प्लेसेस है। पूर्व से लेकर दक्षिण तक इन जगहों पर टूर कर सकते है। इस आर्टिकल में हम बताएंगे भारत की शानदार जगहें जिन्हें आप अपने घूमने का डेस्टिनेशन बना सकते हैं। तो बिना देर किए इन टॉप जगहों के बारें में बताते है। मार्च का महीने में गर्मी कम होती है ऐसे में लोग घूमने का प्लान बनाते है। इस दौरान कई बच्चों के एग्जाम खत्म हो जाते है। वह अपने परिवार या दोस्तों के साथ कहीं न कहीं घूमने जाते है। मार्च का महीना में न ठंड होती है और न ज्यादा गर्मी होती है। यह मौसम घूमने का सबसे बेस्ट होता है। पर्टनर के साथ घूमने के लिए यह समय काफी अच्छा है। वहीं, इस समय पूर्व से लेकर दक्षिण तक मौसम काफी कूल होता है। मार्च में दोस्तों के साथ घूमने का अलग ही मजा होता है। जब भी आप कही घूमने का प्लान बनाते हैं, तो ऐसी जगहों की तलाश करते हैं जहां मस्ती कर सके है, तो देर किस बात कि इस आर्टिकल में हम बताएंगे भारत की शानदार जगहें जिन्हें आप अपने घूमने का डेस्टिनेशन बना सकते हैं।

ऋषिकेश

योग नगरी के नाम से फेमस ऋषिकेश उत्तराखंड का एक शानदार और खूबसूरत हिल स्टेशन है। यहां पर जाना हर किसी का ड्रीम होता है। पहाड़ों का नजारा, झील, झरने, गंगा नदी और घने जंगल ऋषिकेश के आकर्षक केंद्र माना जाता है। यहां पर मस्ती और धमाल के लिए सबसे बढ़िया जगह है। इसी के साथ आप रिवर राफ्टिंग और ट्रेकिंग का बेहतरीन मजा उठा सकते हैं। ऋषिकेश में कैम्पिंग का लुत्फ उठा सकते हैं।

गोवा

गोवा भारत की ऐसी जगह जहां लोग बीच का मजा और वाटर एक्टिविटीज करने के लिए प्लान बनाते हैं। गोवा में सुनहरे समुद्र तटों के लिए पूरे विश्व भर में फेमस है। इसके अलावा शानदार पार्टियां और नाइटलाइफ के बीच आप दोस्तो के साथ यादगार वैकेशन मना सकते हैं। मस्ती और धमाल के लिए गोवा में दूधसागर जलप्रपात, अंजुना बीच, वागाटोर बीच और बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस जैसी खूबसूरत जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

जैसलमेर

जैसलमेर राजस्थान का प्रमुख शहर में से एक है, यहां एक लोकप्रिय पर्यटन भी स्थल है। थार रेगिस्तान की वजह से इसे गोल्डन शहर भी कहा जाता है। जैसलमेर राजस्थान का एक ऐसा शहर है, जहां आप अपने दोस्तों के साथ डेजर्ट सफारी का शानदार मजा लें सकते हैं। यहां पर आप ऊंट की सवारी भी कर सकते हैं। जैसलमेर में आप जैसलमेर फोर्ट, गडीसर झील और पटवों की हवेली जैसी शानदार जगहों पर घूम सकते हैं। इसके साथ ही आप राजस्थानी कल्चर और नृत्य देख सकते हैं इसके साथ ही राजस्थानी खाने का लुत्फ उठा सकते हैं।

हम्पी

अगर आप दक्षिण भारत का टूर करना चाहते हैं तो आप अपने दोस्तों के साथ मार्च के महीने में हम्पी घूमने का प्लान बना सकते हैं। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल में शामिल आप मस्ती करने के लिए हम्पी जा सकते हैं। हम्पी शहर की नाइटलाइफ आपकी यात्रा में चार चांद लगा देगा। यहां पर स्थित पहाडियों और घाटियों का विशेष आकर्षक केंद्र है। हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर, रानी का स्नानागार, मतंग हिल और लोटस महल जैसी बेहतरीन जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

धुंधली दिखती हैं, चीजें कम हो गई आंखों की रोशनी तो खाएं ये चीजें

आंखें शरीर का सबसे जरुरी हिस्सा मानी जाती है परंतु आजकल के खराब लाइफस्टाइल और गलत-खानपान का असर इन पर भी हो रहा है। घंटों तक लैपटॉप पर समय बिताने के कारण आंखें कमजोर हो रही हैं। छोटी उम्र में बच्चों की चश्मा लग रहा है। ऐसे में आंखों का ध्यान रखने के लिए अच्छी डाइट का ध्यान रखना जरुरी है। आंखों की देखभाल करने के साथ-साथ आप डाइट में हैल्दी चीजें शामिल कर सकते हैं। आज आपको इस आर्टिकल के जरिए कुछ ऐसी चीजें बताते हैं जिनके जरिए आप आंखों की रोशनी तेज कर सकते हैं। आइए जानते हैं।

अंजीर को करें डाइट में शामिल

आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए डाइट में विटामिन-ए, सी और ई, जिंक, ल्यूटिन और जैक्सैन्थिन जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर चीजों को शामिल करना जरुरी माना जाता है। वहीं अंजीर में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, पौटेशियम, आयरन, कॉपर, मैक्रो और माइक्रोन्यूट्रिएंट्स, फाइबर और प्रोटीन जैसे गुण मौजूद होते हैं जो आंखों के अलावा पूरे शरीर के लिए फायदेमंद होते हैं।

कैसे करें अंजीर का सेवन?

आंखों की रोशनी तेज करने के लिए आप अंजीर को कई तरह से डाइट में शामिल कर सकते हैं। 3-4 अंजीर को रातभर पानी में भिगोकर रख दें। फिर अगली सुबह उठकर खाली पेट इसका सेवन करें। आप चाहें तो दूध के साथ भी अंजीर खा सकते हैं। लगातार कुछ दिनों तक अंजीर का सेवन करने से आपको खुद ही फर्क दिखने लगेगा।

काली मिर्च, देसी घी और मिश्री

50 ग्राम काली मिर्च, 50 ग्राम धागे वाली मिश्री को बारीक पीस लें। फिर इसमें 250 ग्राम देसी घी मिलाएं और गर्म करें। सुबह शाम इस मिश्रण के दूध के साथ सेवन करने से भी आंखों की रोशनी तेज होगी।

मुंह की लार

सुबह के समय उठकर बिना कुल्ला किए हुए अपनी मुंह की लार को आंखों में काजल की तरह लगाएं। 6 महीने तक इस नुस्खे का इस्तेमाल करने से चश्मे का नंबर कम होने लगेगा।

हल्दी की गांठ और नींबू का रस

हल्दी की गांठ को नींबू के रस में भिगोकर रखें। जब यह सूख जाए तो इसमें 30 दिन तक नींबू का रस डालें। 30 दिन बाद हल्दी की गांठ सुखाकर बारीक चूर्ण बना लें। चूर्ण को दिन में दो बार आंखों पर लगाने से भी आंखों की रोशनी तेज होने लगेगी।

विटामिन-ए युक्त डाइट

डाइट में विटामिन-ए युक्त चीजें शामिल करें। विटामिन-ए आंखों के लिए बेहद आवश्यक माना जाता है। गाजर, पपीता, आंवला, हरी पत्तेदार सब्जियां और शिमला मिर्च को अपनी डाइट में शामिल करें।

शादी से पहले इंस्टेंट ग्लोयिंग स्किन के लिए एक्ट्रेस लेती है आईवी ट्रीटमेंट

बॉलीवुड एक्ट्रेस अपनी एक्टिंग से ज्यादा फिटनेस और खूबसूरती के लिए जानी जाती है। बिना मेकअप के भी इन स्टार्स दीवा का फेस ग्लो करता है और आम लड़कियां भी उनके जैसी ग्लोइंग स्किन पाने की इच्छा रखती हैं लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि फेमस सेलिब्रिटी अपनी बेदाग त्वचा को बरकरार कैसे रखती हैं? वैसे तो यह अपनी डाइट का ख्याल रखती हैं लेकिन इसके अलावा भी ये बहुत सारे ट्रीटमेंट्स लेती हैं जो इनके चेहरे पर चमक बनाए रखते हैं। आजकल खूबसूरत दिखने के लिए इन स्टार दीवा में आई वी ट्रीटमेंट खूब ट्रैंड में है जिसे लेते ही तुरंत चेहरे पर ग्लो आ जाता है। इसका इतना क्रेज है कि जान्हवी से लेकर सोनारिका भदौरिया तक ये ट्रीटमेंट ले रही हैं। अब आप भी सोच रहे होंगे कि ऐसा कौन सा ट्रीटमेंट आ गया जो खूबसूरती के लिए लिया जा रहा है और उसका तुरंत इफेक्ट भी मिल रहा है तो चलिए आपको इस बारे में बताते हैं।

क्या है आईवी ट्रीटमेंट?

इस ट्रीटमेंट को इंट्रावेनस (आईवी) विटामिन थेरेपी कहा जाता है। इस आईवी ट्रीटमेंट के जरिए एक खास तरह का ड्रिप लगाया जा रहा है। स्टार दीवा पार्टी, फंक्शन या फिर शादी से पहले ये ट्रीटमेंट लेती हैं। हाल ही में टीवी एक्ट्रेस सोनारिका भदौरिया अपनी शादी से पहले (आईवी) ड्रिप चढ़वाती नजर आई हैं। इसके अलावा जाह्नवी कपूर भी ये ट्रीटमेंट लेती नजर आई थी। एक्ट्रेस एक फोटोशूट के दौरान ड्रिप लेती नजर आ रही थी।

इस इंट्रावेनस (आईवी) विटामिन थेरेपी को इंट्रावीनस माइक्रोन्यूट्रिएंट थेरेपी और हाइड्रेशन थेरेपी के नाम से भी जाना जाता है। एक्सपर्ट इसे वेलनेस ड्रिप कहते हैं। वैसे तो इस ड्रिप का इस्तेमाल डॉक्टर बीमार व्यक्ति की हेल्थ को बूस्ट करने के लिए लगाई जाती है ताकि जल्दी रिकवर हो सके। ड्रिप के जरिए मेडिसिन शरीर में जाती है। इससे शरीर को वो पोषक तत्व मिलते हैं जिनकी कमी को नेचुरल तरीके या डाइट के माध्यम से पूरा नहीं किया जा सकता।

आईवी ट्रीटमेंट के फायदे

इस थेरेपी में शरीर के अंदर विटामिन और मिनरल्स को सीधे खून में पहुंचाया जाता है। बता दें कि इसमें विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, विटामिन सी और ग्लूटाथियोन मौजूद होता है। जिनका इस्तेमाल त्वचा को गोरा करने के लिए किया जाता है। इस इन्फ्यूजन में 20 मिनट से एक घंटे तक का समय लगता है। कई मशहूर हस्तियां प्ट विटामिन थेरेपी लेती हैं और ये लोग प्ट बार, ड्रिप बार और प्ट लाउंज में ये थेरेपी लेती दिखती हैं।

आईवी ड्रिप से शरीर को विटामिन और मिनरल तो मिलते हैं ही साथ में इम्यून सिस्टम भी बूस्ट होता है जो रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ देता है।

शरीर को हाइड्रेट रखने में मदद करता है। एजिंग साइन को रोकता हैं और इससे स्किन सुंदर, फ्लेक्सिब और ग्लोइंग रहती हैं। कुछ रिपोर्ट्स ये भी कहती है कि ये हैंगओवर या पेट के फ्लू से भी राहत दिलाती है।

आईवी ट्रीटमेंट के साइड इफेक्टस

बता दें कि जहां यह कई फायदे देती है, वही इसके कुछ साइड इफेक्टस भी है।

इसके कारण रक्त के थक्के, नसों में जलन और सूजन जैसी प्रॉब्लम हो सकती है। अगर इसकी मात्रा ज्यादा मात्रा हो जाए तो शरीर में पोषक तत्व की मात्रा बढ़ने से दिल, गुर्दे या रक्तचाप जैसी प्रॉब्लम होने की संभावना बढ़ जाती है।

कान में जमी मैल हो जाएगी बिल्कुल साफ, आजमाएं ये 3 नुस्खे

कान शरीर का सबसे नाजुक अंग होता है। ऐसे में इसके साथ कुछ भी ऐसा नहीं करना चाहिए जिसके कारण इसे नुकसान पहुंचे। कान के साथ की हुई थोड़ी सी भी छेड़छाड़ परेशानी का कारण बन सकते हैं। कान में गंदगी और खोट जमा हो जाना आम बात है ऐसे में इसे साफ करने के लिए अक्सर सभी ईयर बड्स, माचिस की तीली या किसी नुकली चीज का इस्तेमाल करते हैं लेकिन यह चीजें आपके कानों को नुकसान भी पहुंचा सकती हैं। ऐसे में आज आपको इस आर्टिकल के जरिए कान साफ करने के कुछ आसान से नुस्खे बताते हैं।

डॉक्टर से भी लें सलाह

यदि आपके कान में जमा खोंट बहुत ही ठोस हो गई है तो इसे खुद निकालने की जगह आप डॉक्टर से सलाह लें। वैसे तो ईयर वैक्स कानों को बाहर से आने वाली गंदगी से बचाने में मदद करती है परंतु जब ये ज्यादा मात्रा में हो जाए तो इससे साफ सुनाई भी नहीं देता। ऐसे में आपको कानों की सफाई का खास ध्यान रखना चाहिए।

तेल

कान की खोंट या गंदगी निकालने के लिए आप तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं। बादाम या फिर सरसों के तेल की दो बूंदे कानों में डालकर सिर को उसी डायरेक्शन में रखें। 5 मिनट तक इसे ऐसे ही रहनें दें। मैल नरम हो जाएगी और कान से आसानी से निकल जाएगी।

गर्म पानी

कान की गंदगी साफ करने के लिए आप गर्म पानी इस्तेमला कर सकते हैं। एक कप गर्म पानी लें, फिर इस पानी को कानों में ध्यान से डालें और फिर साथ में ही निकाल दें इससे भी मैल आसानी से निकाल जाएगी।

हाइड्रोजन पैरॉक्साइड

कुछ लोग कानों की गंदगी निकालने के लिए हाइड्रोजन पैरॉक्साइड का इस्तेमाल भी करते हैं परंतु इसका इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर की सलाह ले लें। इसके बाद ही इसे कानों में डालें।

काली किशमिश के साथ दूध का ऐसे करें सेवन

बीमारियां हो जाएंगी छूमंतर

खट्टी मीठी नारंगी किशमिश तो आपने खूब खाई होगी, लेकिन क्या कभी काली किशमिश का स्वाद चखा है ?

अगर आपने काली किशमिश कभी नहीं खाई तो आप इसके फायदों से भी वाकिफ नहीं होंगे।

दरअसल नारंगी किशमिश हरे अंगूरों और काली किशमिश काले अंगूरों से बनती है। काली किशमिश आम नारंगी किशमिश की तुलना में ये कहीं ज्यादा फायदेमंद होती है।

ऐसे बनती है काली किशमिश

किशमिश बनाने के लिए अंगूर का इस्तेमाल होता है, लेकिन काली किशमिश के लिए आम अंगूर के बजाए काले अंगूर का इस्तेमाल किया जाता है। काली किशमिश को रातभर दूध में भिगोकर खाने से कई फायदे होते हैं। चलिए आपको बताते हैं काली किशमिश दूध में भिगोकर खाने के कुछ अनोखे फायदे। इसके सेवन से बैड कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम होती है। यह ब्लड में मौजूद फैट की मात्रा को भी कम करता है। आप समझ ही सकते हैं की शरीर के लिए कितना फेयदेमंद है क्योंकि आजकल लोगों की फूड हैबिट्स खराब हैं। सर्दीयों का मौसम आ गया है तो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता की कम हो गई है। काली किशमिश को दूध को पीने से शरीर की इम्यूनिटी को जबरदस्त बूस्ट मिलता है।

निखारती है त्वचा

काली किशमिश में मौजूद होते हैं ऑक्सीडेंट्स त्वचा को निखारने का काम करती है औस कई तरीके के स्किन इंफेक्शन से भी बजाता है।

खट्टी मीठी नारंगी किशमिश तो आपने खूब खाई होगी, लेकिन क्या कभी काली किशमिश का स्वाद चखा है ? अगर आपने काली किशमिश कभी नहीं खाई तो आप इसके फायदों से भी वाकिफ नहीं होंगे। दरअसल नारंगी किशमिश हरे अंगूरों और काली किशमिश काले अंगूरों से बनती है। काली किशमिश आम नारंगी किशमिश की तुलना में ये कहीं ज्यादा फायदेमंद होती है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजय शंकर शर्मा द्वारा ग्रुप 5 प्रकाशन 55-बी, वजीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित एवं डी-206-सी, विभूतिखण्ड गोमती नगर लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक- विजय शंकर शर्मा
(M.)- 9628478339, 9335322739 Ph: 0522- 4075237 Fax: 0522- 2306048 Email- charchitrajnit@gmail.com